विस्तार परिदृश्य

4. विस्तार परिदृश्य

4.5 प्रस्तावना

विस्तार निदेशालय का लक्ष्य देशव्यापी नेटवर्क, विभिन्न प्रकाशनों, कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिए उपयोगी अनुसन्धान निष्कर्षों का प्रसार करना है। यह भा.वा.अ.शि.प. के विभिन्न संस्थानों तथा केन्द्रों के विभिन्न क्रियाकलापों को समन्वित करता है तथा वृहद विस्तार रणनीतियां विकसित करता है। यह निदेशालय ई आई ए तथा संबंधित विषयों पर परामर्शी सेवाएं भी देता है।

निदेशालय के पास वानिकी विस्तार को गति देने के लिए मीडिया एवं प्रकाशन (अब जिसे मीडिया एवं विस्तार प्रभाग नाम दिया गया है), सांख्यिकी प्रभाग तथा पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग हैं जो बुलेटिनों, विवरणिकाओं, लघु पुस्तिकाओं, न्यूजलैटरों, वन सांख्यिकी तथा वार्षिक रिपोर्टों एवं कार्यशाला, प्रशिक्षण द्वारा देश भर में फैले वन विज्ञान केंद्रों और प्रदर्शन ग्रामों के जरिए वानिकी अधिमत का विस्तार करते हैं।

मीडिया एवं विस्तार प्रभाग द्वारा वानिकी क्षेत्र के अनुसन्धान निष्कर्षों को प्रसारित करने के लिए भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों के क्रियाकलापों और रणनीतियों पर नजर रखी जाती है। प्रभाग द्वारा भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों के विभिन्न अनुसन्धान एवं विकास कार्यक्रमों का मासिक लेखा जोखा अनुरक्षित किया जाता है जिसकी जानकारी मंत्रालय को दी जाती है। प्रभाग द्वारा भा.वा.अ.शि.प. का सूचना पत्र प्रकाशित करके भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों और राज्य वन विभागों में प्रसारित किया जाता है। भा.वा.अ.शि.प. और इसके संस्थानों की रिपोर्टे एकत्रित की जाती हैं जिन्हें संकलित, सम्पादित और प्रकाशित करके भा.वा.अ.शि.प. की वार्षिक रिपोर्ट के रूप में संसद के पटल पर प्रस्तुत किया जाता है। अन्य प्रकाशनों में वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'तरूचिंतन', भा.वा.अ.शि.प. का अर्द्धवार्षिक न्यूजलैटर तथा वानिकी समाचार शामिल है। प्रभाग ने 'Forestry in the Service of Nation: ICFRE Technologies' के नाम से भा.वा.अ.शि.प. प्रौद्योगिकियों तथा प्रक्रियाओं पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक भी प्रकाशित की हैं रिपोर्ट की अवधि में "Extension Strategies in Forestry Research for ICFRE", "Agroforestry Research at ICFRE", "Information Booklet of ICFRE" तथा वर्ष 2012 के लिए ICFRE Desk Calendar भी प्रकाशित किए गए।

राज्य वन विभागों के सहयोग से वन विज्ञान केंद्रों की स्थापना तथा भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा अंगीकरण के लिए प्रदर्शन ग्रामों के चयन की प्रक्रिया में भी पर्याप्त प्रगति हुई है। विभिन्न राज्यों तथा संघ शासित राज्यों में छब्बीस वन विज्ञान केंद्र स्थापित किए गए हैं। देश के विभिन्न पारि जलवायु क्षेत्रों में आठ प्रदर्शन ग्राम स्थापित और अनुरक्षित किए गए हैं।

प्रभाग द्वारा परिषद् और उसके संस्थानों में राजभाषा हिन्दी को प्रख्यापित एवं विकसित करने के लिए भी सेवाएं दी गई हैं। सभी आठ संस्थानों से राजभाषा हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट ली जाती हैं जिन्हें मुख्यालय में संकलित करके पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के राजभाषा विभाग को भेजा जाता है। सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रभाग द्वारा राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन पर प्रशिक्षण और कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।

सांख्यिकी प्रभाग

1. भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित भारतीय वानिकी क्षेत्र 2010 का कार्य पूर्ण कर लिया गया है।
2. भा.वा.अ.शि.प. आई टी टी ओ द्वारा 'भारत में लुग्दी, कागज और हार्ड बोर्ड उद्योग' पर नमूना सर्वेक्षण का कार्य पूर्ण कर लिया गया है, जिसकी रिपोर्ट आई टी टी ओ को भेज दी गई है।
3. प्रकाष्ठ बांस व्यापार बुलेटिन के दो छमाही अंक प्रकाशित किए गए हैं।
4. एनओवीओडी बोर्ड द्वारा प्रायोजित परियोजना 'भारत में वृक्षजनित तेल-फलियों पर डाटाबेस का विकास' पर सर्वेक्षण की स्थिति पर प्रारूप दस्तावेज एन ओ वी ओ डी बोर्ड को भेज दिया गया है।
5. वन अनुसन्धान संस्थान (सम) विश्वविद्यालय के शोध छात्रों को परामर्श द्वारा सांख्यिकीय जानकारियां दी गई हैं। वन अनुसन्धान संस्थान (सम) विश्वविद्यालय के पी एच डी अध्येताओं के लिए अनुसन्धान पद्धतियों और सांख्यिकी विश्लेषण पर अनिवार्य कोर्स का समन्वय किया गया।

6. भारत में वानिकी सांख्यिकी 2009 को तैयार करके प्रस्तुत किया गया। दिशानिर्देशों के अनुसार प्रकाशन का क्षेत्र मार्च 2010 के आंकड़े को डालर के लिए बढ़ा दिया गया। निदेशानुसार आंकड़ों को सम्मलित करने के लिए प्रकाशन का विस्तार किया जा रहा है।

पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग द्वारा वन एवं पर्यावरणीय तथा वन क्षेत्रों के विषयों पर परामर्श दिए जाते हैं, जैसे जल विद्युत, खनन, आधारभूत संरचना, रोडवेज तथा प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित योजनाएं। प्रभाग द्वारा अन्य संबंधित संस्थानों में क्षेत्रीय परामर्श के लिए स्थापित ई आई ए प्रकोष्ठों के साथ भी समन्वय किया जाता है। संस्थान ने मार्च 2012 तक ₹ 1147.60 लाख की 30 वैज्ञानिक सेवाओं को पूरा कर लिया है और ₹ 2232.10 लाख की 16 परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है।

धारणीय भूमि एवं पारिपद्धति प्रबंधन परियोजना (स्लेम)

विश्व बैंक द्वारा निधिकृत परियोजना, 'भारत में पारिपद्धति प्रबंधन तथा भूमि को निरंतर रूप से उच्चीकृत करने और मुख्य धारा में लाने के लिए नीति तथा सांस्थानिक सुधार' का कार्य भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को दिया गया जिसका कार्यान्वयन भा.वा.अ.शि.प. द्वारा अगस्त 2009 से किया जा रहा है। कार्यान्वयन अवधि तीन वर्ष है।

स्लेम कार्यक्रम भारत सरकार (जी.ओ.आई.) और 'वैश्विक पर्यावरणीय सुविधा' (जी.ई.एफ.) द्वारा सहयोगी देशों के कार्यक्रमों (सी.पी.पी.) के साथ संयुक्त रूप से संचालित किए जा रहे हैं। इसमें विश्व बैंक, खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.) से संबंद्ध जी ई एफ भागीदार शामिल है।

धारणीय भूमि और पारिपद्धति प्रबंधन - देशों की भागीदारी कार्यक्रम (स्लेम सी.पी.पी.), भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार और वैश्विक पर्यावरण सुविधा का संयुक्त प्रयास है जिसके तहत भारत के विभिन्न राज्यों में मुख्यत: विश्व बैंक और यू एन डी पी तथा एफ ए ओ की सहायता से सात परियोजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय का मरूभूमि प्रकोष्ठ, एस एल ई एम कार्यक्रम पद्धति का राष्ट्रीय निष्पादक निकाय है। भा.वा.अ.शि.प. को, एस एल ई एम कार्यक्रम का तकनीकी सुविधा संगठन बनाया गया है। सभी सात उप परियोजनाओं में पूर्ण सक्षम परियोजना प्रबंधन एकक है, जिसमें परियोजना प्रबंधक, परियोजना निदेशक (वरिष्ठ सरकारी अधिकारी) और परियोजना संचालक समिति शामिल है, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ सरकारी अधिकारी द्वारा की जाती है। एस एल ई एम कार्यक्रम पद्धति को समन्वित करना संयुक्त उत्तरदायित्व है जिसमें एस एल ई एम के सिद्धांत, हमारे राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर की नीतियों तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के कार्यक्रम से मेल खा सकें। भूमि प्रबंधन, जैवविविधता संरक्षण तथा जलवायुवीय परिवर्तन अनुकूलन में एस एल ई एम-सी पी पी बहु-क्षेत्रीय पद्धति है। सतत भूमि एवं पारिपद्धति प्रबंधन कार्यक्रम इस अवधारणा पर आधारित है कि जोत-क्षेत्र बढ़ाए बिना कृषि उत्पादकता के जरिए खाद्य सुरक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती है। चुनौतियां का सामना करने और सतत पर्यावरणीय सेवाओं की प्राप्ति के लिए उपयुक्त भूमि उपयोजन तथा देश के संसाधनों और कृषि-पारिपद्धतियों का सतत प्रबंधन ही सही उपाय है।

एस एल ई एम कार्यक्रम पद्धति का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए धारणीय भूमि प्रबंधन और जैवविविधता उपयोजन को बढ़ावा देना तथा जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए सामग्रियों और सेवाओं को उपलब्ध कराने के लिए पारिपद्धतियों की क्षमता को अनुरक्षित करना है।

वर्ष 2011-12 के दौरान परियोजना की मुख्य उपलब्धियां इस प्रकार हैं :

1. कार्यशालाएं/सेमीनार/प्रशिक्षण :

- परियोजना सहभागियों सहित सभी मुख्य भागीदार हितधारकों के साथ आधारभूत अध्ययनों पर विचार-विमर्श करने हेतु परामर्शी बैठक सह-कार्याशाला का आयोजन करना।
- परियोजना सहभागियों सहित सभी मुख्य भागीदार हितधारकों के साथ शुष्क भूमि क्षेत्रों में एस एल ई एम की भूमिका का निर्धारण करना।
- सत्ताईस जुलाई 2011 को मरूस्थल चिन्हीकरण और समाघात सूचकों पर रिपोटिंग पर विचार मंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट में झूम खेती पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।

- शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर में शुष्क क्षेत्रों के धारीण विकास के लिए प्राकृतिक संसाधन संरक्षण पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर में वन विभाग के अग्रगामी स्टाफ और अन्य लाभार्थियों के लिए मृदा और जल संरक्षण पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन।

2. आधारभूत अध्ययनों को अन्तिम रूप प्रदान करना

अध्ययन के मुख्य परिणाम उभरती हुई प्रवृत्तियां, भविष्य में स्थिति का आकलन करने के लिए निर्देश-चिह्न का काम करेंगी। विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा एस एल ई एम के सूचकों के सावधानीपूर्वक चयन के आधार पर घटकों अर्थात भूमि निम्नीकरण, जैवविविधता, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव/भूमि उपयोजन पद्धतियों की वैविध्य तथा नीति और संस्थानिक संरचना तथा देश के संरचनात्क कार्य का मॉनीटरिंग और मूल्यांकन करके आधार रेखा अध्ययन किया गया?

भूमि निम्नीकरण

निम्नीकरण की प्रक्रिया का मुख्य कारक जल-अपरदन है जिससे अधिकांश राज्य प्रभावित हैं। इनमें उत्तर प्रदेश सबसे अधिक कुप्रभावित है जिसमें टी जी ए का चव्वन प्रतिशत भाग आता है। इसके बाद मध्य प्रदेश, कर्नाटक, झारखण्ड, अरूणाचल प्रदेश और मेघालय का स्थान है जो टी जी ए का क्रमश: 44, 41, 40, 32 और 31 प्रतिशत है। तीस प्रतिशत प्रभावित क्षेत्र होने के कारण असम का स्थान सातवां और निम्नीकरण में उन्तीस प्रतिशत होने के कारण महाराष्ट्र का स्थान आठवां है।

निम्नीकरण का दूसरा बड़ा कारण मृदा लवणीयता है जो मुख्यत: तटवर्ती राज्यों को प्रभावित करती है। खाद्यान्न उत्पादन के लिए कुछ राज्यों के मुख्य भागों में अति सिंचाई, लवणीयता का दूसरा बड़ा कारण है। सबसे अधिक लवणीयता अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में है जो टी जी ए का 9% कवर करती है। इसके बाद गुजरात में 8% और पश्चिमी बंगाल में 5% है। उड़ीसा, राजस्थान और हरियाणा में 1% क्षेत्र लवणीयता प्रभावित है।

मृदा सोडीयता, भूमि के भौतिक और पोषक अभिलक्षणों पर प्रभाव डालती है और उसे अंतत: पूर्ण या आंशिक रूप से अनुत्पादक बना देते हैं। उत्तर प्रदेश में सोडीयता की समस्या अत्यंत गहन है जिसमें टी जी ए के प्रभाव से 6% प्रभावित है, इसके बाद हरियाणा में 4% तथा पंजाब, गुजरात और तमिलनाडु में तीन-तीन प्रतिशत है। देश के अन्य राज्य सोडीयता से अधिक प्रभावित नहीं हैं।

जैवविविधता संरक्षण

अनारक्षित क्षेत्रों में मछली पकड़ने, रेत की खुदाई, नदी के किनारों की खेती और औद्योगिक प्रदूषण से घड़ियाल खतरे में हैं। जलाशय और बांध बनाने से वासस्थलों में कमी होने, कठोर कानून न होने, जाल और फंदों से पकड़े जाने और कई अंधविश्वासों के कारण घड़ियाल अत्यंत संवेदनशील सरीसृप हो गए हैं।

उष्णकटिबंधीय वनों के पक्षी समुदाय को मानव आबादी वाले भू-दृश्यों में पुन: स्थापित करने के लिए नजदीक के वनों का अनुरक्षण करना आवश्यक है। नंदादेवी जैवमंडल रिजर्व में मनुष्य और वन्यजीवों का टकराव : कुल नुकसान में से रक्षित क्षेत्र से जुड़े प्रत्येक गांव में फसल का 50% से अधिक नुकसान हुआ है। वर्तमान संरक्षण नीतियों और निवारक उपायों में ढिलाई के कारण स्थानीय निवासियों की समस्याएं बढ़ रही हैं। इसके लिए फसल उगाने और फसलों का संघटन बदलने, खासकर औषधीय पादपों (अधिक मूल्य और कम आकार) की खेती का सुझाव दिया जा रहा है। यह रक्षित क्षेत्र प्रबंधन प्रभावशीलता का मामला है जिस पर संयुक्त रूप से अधिक समेकित अध्ययन करने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन अनुकूलन

भारतीय वन सर्वेक्षण (एस एफ आर, 2009) के अनुसार भारत का अधिकांश वन क्षेत्र पर्णपाती वन (33.92%) और उष्णकटिबंधी शुष्क पर्णपाती वन (30.16%) के रूप में है। जो कि भारत के वन आच्छादन के मुख्य भाग को बनाएगा, देश में फैले 16 वन किस्म, वर्ग श्रेणियों के क्षेत्र और पार्थिव स्थिति पर उदघरणों सहित विचार किया जाता है कि उप किस्म का कौन सा वर्ग वैविध्यों, स्थानीय कारकों और पुष्पीय गुणों के साथ निकट भविष्य में उपलब्ध हो सकेगा। हॉल ही में किए सर्वेक्षण से पता चलता है कि चंदर साल, 8ए-/सी3 मध्य भारत, उप उष्णकटिबंधीय पर्वतीय वन, 6/डीएसआई केसिया औरीक्यूलाटा (शुद्ध) झाड़ी, 5/1एस3 आप्लवित बबूल वन (शुद्ध वन) जैसा कि चैम्पियन और सेठ ने 1968 में वर्णित किया था, वन किस्मों के

रूप में अधिक या कम मात्रा में गायब है। इसके लिए जलवायु परिवर्तन भी उत्तरदायी कारक हो सकता है।

नीति तथा सांस्थानिक संरचना और सामाजिक - आर्थिक पहलू

कृषि के लिए बजट छूट 1976–80 में 3% था जो 2001–03 में बढ़कर 7% हो गया। इसी अवधि के दौरान कृषि जी डी पी में लोक निवेश 4% से घटकर 2% रह गया। अधिकांश छूट उर्वरकों, विद्युत और सिंचाई पर है जबकि इन कारकों ने प्राकृतिक संसाधनों का निम्नीकरण किया है।

यद्यपि कृषि पर आधारित आबादी प्रतिशत 1950 में 77% से घटकर 2004 में 67% रह गया है तथापि कृषि पर आधारित जनसंख्या 1950–51 से 2003–04 तक 2.44 गुणा प्रतिशत बढ़ गई है। निम्नीकरण के उच्च स्तर वाले राज्यों में कृषि जी डी पी – न्यूनतम है। इसके बावजूद कृषि पर आधारित आबादी अधिक है।

3. राष्ट्रीय संचालन समिति

- राष्ट्रीय संचालन समिति (एन.एस.सी.) की दूसरी बैठक 18 अप्रैल 2011 को की गई।
- राष्ट्रीय संचालन समिति (एन.एस.सी.) की तीसरी बैठक 28 फरवरी 2012 को की गई।

4. प्रकाशन/वेबसाइट

- न्यूजलैटर (खण्ड 1 नं. 1 एवं खण्ड 2 नं. 1) वार्षिक रिपोर्ट तथा शुष्क भूमि क्षेत्रों में स्लेम की भूमिका पर कार्रवाईयों पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- स्लेम – सी पी पी वेबसाइट slem-cpp.icfre.gov.in
- स्लेम : शुष्क भूमियों में वनों की भूमिका पर कार्रवाईयों का प्रकाशन किया गया।
- एक अप्रैल 2010 से 31 मार्च 2011 तक की वार्षिक रिपोर्ट का प्रकाशन किया गया।

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय तथा सूचना केंद्र (एन.एफ.एल.आई.सी.)

- राष्ट्रीय वन पुस्तकालय तथा सूचना केंद्र, (एन.एफ.एल.आई.सी.) वानिकी तथा संबद्ध विज्ञानों में दक्षिण तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में सबसे समृद्ध है। एन एफ एल आई सी द्वारा अपने उपभोक्ताओं को सभी किस्म की सूचना और पुस्तकालय सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं यथा: संदर्भ, संकेत, उधार, रिप्रोग्राफी, अद्यतन जानकारियां, अंतः पुस्तकालय लोन, मशीन से सूचनाओं की पुनः प्राप्ति, पढ़ने योग्य डाटाबेस आदि। वर्ष के दौरान उपभोक्ताओं को बाहर जाकर पढ़ने के लिए 29324 पुस्तकें दी गई और 62523 प्रलेखों पर पुस्तकालय में ही विचार–विमर्श किया गया।
- 1330 पुस्तकें तथा अन्य प्रलेख खरीदकर पुस्तकालय के प्रलेख संग्रह को अधिक समृद्ध बनाया गया जिसमें से 691 पुस्तकों को ₹ 12.59 लाख में खरीदा गया। पुस्तकालय द्वारा 71.05 लाख की लागत में 83 भारतीय तथा 78 विदेशी पीरियोडिल्स के लिए अंशदान किया। पुस्तकालय को 425 पीरियोडिकल्स निशुल्क प्राप्त भी हुए। पुस्तकालय द्वारा 58.67 लाख की लागत में भा.वा.अ.शि.प. के क्षेत्रीय संस्थानों के लिए 47 अत्यंत उपयोगी जर्नल तक आनलाईन पहुंच की सुविधा भी दी गई।
- भा.वा.अ.शि.प. के क्षेत्रीय संस्थानों और केंद्रों के लिए 14.59 लाख रूपये में वानिकी के अनुसन्धान लेखों की 1939 से अद्यतन पहुंच उपलब्ध कराई गई जिसके लिए संदर्भिका डाटाबेस – वन विज्ञान डाटाबेस को अंशदान दिया गया।

वानिकी तथा पर्यावरण विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर अनुसन्धान को सही दिशा देने, विश्लेषित करने और समग्र दृष्टिकोण देने के लिए एन एफ एल आई सी द्वारा स्कोप्स के लिए अंशदान दिया जाता है जो मुख्य समीक्षित साहित्य का सबसे बड़ा सार और उद्धरण डाटाबेस है। इसमें उत्तम उपकरणों सहित स्तरीय वेब सोर्स है। इसमें रु. 8.49 लाख का व्यय किया गया।

एन एफ एल सी अपने बुक डिपो के जरिए भा.वा.अ.शि.प. के प्रकाशनों को बेचती है। वर्ष के दौरान राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों आदि को 777 पुस्तकें तथा 13 वी सी डी बेची गई जिससे ₹ 170846.00 की आमदनी हुई।

पर्यावरणीय सूचना तंत्र (इन्विस)

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एन एफ एल आई सी में वानिकी पर इन्विस केंद्र की स्थापना की गई। वर्ष के दौरान केंद्र ने नए संदर्भों सहित निम्नलिखित छः डाटाबेस शामिल किए, यथा : भारतीय वानिकी सार–संग्रह, सहभागिता वन प्रबंधन, *प्रोलोपिस ज्यूलीफेरा*, पापलर, पर्यावरण एवं वन, वर्तमान वानिकी साहित्य, जिन तक केंद्र के वेबसाइट यू आर एल:

www.frienvis.nic.in से पहुंचा जा सकता है। जर्नल्स के विषयगत पृष्ठों के साथ -साथ भारत में वनाच्छादन, आगामी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमीनारों, संगोष्ठी, प्रशिक्षण कोर्सो आदि की जानकारियां भी वेबसाइट में रखी गई।

प्रकाशन: इन्विस केंद्र ने वानिकी पर एक विशेष अंक अकाष्ठीय वन उत्पादों पर इन्विस वानिकी बुलेटिन तथा पर्यावरण एवं वन न्यूज डाइजेस्ट पर पांच अंक प्रकाशित किए हैं।

4.1 वन विज्ञान केंद्र (वी.वी.के.) और प्रदर्शन ग्रामों (डी.वी.) पर रिपोर्ट

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

वन विज्ञान केंद्र

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने आज तक अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में छः वन विज्ञान केंद्र (वी.वी.के.) स्थापित किए हैं।

प्रत्येक वन विज्ञान केंद्र में प्रशिक्षण तथा पोस्टरों और पट्टों द्वारा सूचना प्रदर्शित करने के लिए स्थान रखा गया है। किसानों और आगंतुकों में वितरण के लिए हस्तपुस्तिकाओं और विवरणिकाओं की प्रतियां रखी गई हैं। वर्ष के दौरान वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में विभिन्न विषयों पर आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षणों की सूचना देने के लिए वार्षिक वन अनुसन्धान प्रशिक्षण कैलेण्डर रखा गया है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान निम्नलिखित प्रशिक्षण आयोजित किए गए :

- औषधीय पौधों की खेती, उपयोगिता, व्यवसायीकरण में समस्याएं व समाधान, वी वी के, हल्द्वानी में 13 से 15 मार्च 2012
- शहरी वानिकी, औषधीय पौधों का शहरी परिवेश में स्थापन एवं होली के पर्यावरण हितैशी रंग, वी वी के यू टी, चंडीगढ़ में 8 से 10 फरवरी 2012
- बुलोवाल शंकरी, पंजाब में परती भूमियों का पारिपुर्नस्थापन, 14 से 16 दिसम्बर 2011 तथा वी वी के, पिंजौर में 4 से 6 जनवरी 2012
- प्राकृतिक रंजक निष्कर्षण तथा सुगन्ध पद्धति प्रौद्योगिकी और चंडीगढ़ (यू टी) के अध्यापकों के लिए औषधीय पादपों की खेती में मूल्य वृद्धि, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 2से 4 नवम्बर 2011
- वी वी के, पिंजौर में 6 से 8 सितम्बर 2011 तक वन मापन

वी वी के, पिंजौर में सहभागी

प्रदर्शन ग्राम के तहत पौधशाला तकनीकों पर प्रशिक्षण

वी वी के प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत जी पी एस पर प्रशिक्षण

- शहरी रोपण : वृक्ष प्रजातियों का चयन में तकनीकें एवं विशिष्टीकरण, वी वी के, यू टी, चंडीगढ़, 17 से 19 अगस्त 2011
- रोपणियों के जरिए भूमि पुनरूद्धार, वी वी के, एन सी टी, दिल्ली, 29 से 31 अगस्त 2011
- कृषि वानिकी – जीविकोपार्जन सुरक्षा के अवसर, वी वी के, हल्द्वानी में 9 से 11 अगस्त 2011
- वन अनुसन्धान संस्थान की प्रौद्योगिकियों की सूचना एवं नवीनता का प्रसारण : वी वी के, पिंजौर, 24 और 25 मार्च 2011
- 'वृक्षों का मापन एवं काट–छांट' वी वी के, होशियारपुर में 1 से 3 फरवरी 2011

वी वी, के तहत मॉडल पौधशाला

प्रदर्शन प्रशिक्षण के दौरान कार्यक्षेत्रीय दौरा

- वन अनुसन्धान संस्थान की प्रौद्योगिकियों की सूचना एवं नवीनता का प्रसारण : वी वी के, यू टी चंडीगढ़, 22 से 24 फरवरी 2011
- वन मापन तथा वृक्षों की काट–छांट तकनीकें : वी वी के, हल्द्वानी, 8 से 10 फरवरी 2011

प्रदर्शन ग्राम, श्यामपुर

मार्च 2008 के दौरान देहरादून के निकट श्यामपुर गांव में मॉडल पौधशाला विकसित की गई। इस पौधशाला का विकास श्यामपुर की बागवान ग्रामोद्योग समिति के सहयोग से किया गया। देहरादून की सीमा से जुड़े गांवों के किसान, वानिकी उत्पादों से जुड़े गैर सरकारी संगठन, लघु उद्योगों से जुड़े हुए लोग और विद्यार्थी इसके लाभार्थी हैं।

देहरादून के श्यामपुर गांव में 19 से 21 अक्टूबर 2011 तक 'औषधीय पादपों की पौधशाला और रोपण तकनीकें तथा उपयोजन' तथा 27 से 29 मार्च 2012 तक 'औषधीय पादप तथा मशरूम की खेती और उपयोजन' पर प्रशिक्षण दिए गए।

पौधशाला आदर्श

i. पिंजौर और चंडीगढ़ में मॉडल पौधशाला स्थापित की गई है।

वी.वी. के क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम के अधीन प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के विभिन्न विषय इस प्रकार थे :

- वानिकी अनुसन्धान एवं इसके उपयोजन पर जागरूकता कार्यक्रम
- बांस का विस्तार, उपयोजन तथा रक्षण

- अकाष्ठीय वन उत्पादों का महत्व, उपयोजन तथा रक्षण
- पौधशाला तथा रोपण तकनीकें
- बीजों का भण्डार, एकत्रण तथा रक्षण
- वन मापन तथा वृक्ष छटांई तकनीकें
- परती भूमि का पारिपुनरूद्धार
- कृषि वानिकी पद्धतियां

सी एस एफ ई आर, इलाहाबाद द्वारा वन विज्ञान केंद्र, कानपुर की स्थापना

'समृद्धि के लिए बांस पर प्रदर्शन दौरा सह–प्रशिक्षण' का आयोजन 13 से 17 जून 2011 तक देहरादून, उत्तराखण्ड में किया गया। एन बी एम कार्यक्रम के अधीन उत्तर प्रदेश वन विभाग द्वारा प्रशिक्षण का निधियन किया गया।

'रोपण स्टॉक सुधार' पर प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन सी एस एफ ई आर, इलाहाबाद द्वारा 19 से 21 मार्च 2012 तक वन विज्ञान केंद्र, कानपुर में किया गया।

सी एस एफ ई आर द्वारा प्रदर्शन ग्राम (डी.वी.) की स्थापना:

प्रदर्शन ग्राम स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य, प्रदर्शन के लिए कम लागत वाली आदर्श पौधशाला विकसित करना है। स्थल पर पौधशाला के लिए वर्मीकम्पोस्टिंग एकक, प्रशिक्षण शेड, बांस उपचार टैंक और पौधशाला के लिए हैंड पम्प आदि विकसित किए गए हैं। पौधशाला में सतावर, कालमेघ, चितरक, कलावांसा, आंवला, इमली, बेल, टीक, जैट्रोफा के पौधे उगाए और अनुरक्षित किए जा रहे हैं। पौधों को किसानों की आवश्यकतानुसार वितरित किया गया। भूखण्डों में जैट्रोफा से जैवबाड़ बनाई गई है। वानिकी कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता लाने के लिए प्रदर्शन ग्राम (सैयदपुर) में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

सा.वा.पा.पु.के., इलाहाबाद के प्रदर्शन ग्राम में 19 अक्टूबर 2011 को किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण/प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय था–सतावर (*एस्परागस रेसीमोसस*) की खेती, उपयोग एवं प्रयोग विधि।

प्रदर्शन ग्राम में प्रशिक्षण कार्यक्रम का दृश्य

सा.वा.पा.पु.के., इलाहाबाद के सैयदुपुर के प्रदर्शन ग्राम में 31 मार्च 2012 को एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण/प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विषय था – **सामाजिक आर्थिक विकास में बांस की भूमिका:** किसानों और महिलाओं सहित बड़ी संख्या में लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

वी वी के कोयम्बटूर, तमिलनाडु

वन विभाग और वन्यजीव, स्टॉफ पांडुचेरी के लिए 28 अप्रैल 2011 को तेजी से उगने वाली प्रजातियों की पौधशाला और रोपण तकनीकों पर कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 65 व्यक्तियों ने भाग लिया।

तमिलनाडु वन अकादमी के फॉरेस्टर प्रशिक्षणार्थियों के लिए 16 और 17 जून 2011 को रोपण तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में करीब 50 फॉरेस्टर्स ने भाग लिया।

'वन वृक्षों पर लगने वाले कीटों का प्रबंधन' विषय पर कराइकल में 21 से 23 जून 2011 तक किसानों को प्रशिक्षण दिया गया जिसका आयोजन पांडुचेरी सरकार, वन एवं वन्यजीव विभाग द्वारा किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं. के *कैज्वरीयना इक्वीसिटीफोलिया* के 16069 रेमेट्स सहित 35 क्लोन्स को वी वी के द्वारा तैयार किया गया जिनकी पहचान सामाजिक वानिकी प्रभाग, सूरत, गुजरात वन विभाग द्वारा की गई और साथ ही *कैज्वरीयना इक्वीसिटीफोलिया* के कृंतक बीजोद्यान (सी.एस.ओ.) की स्थापना के लिए आवश्यक तकनीक दी गई। व.आ.वृ.प्र.सं. ने 35 क्लोन्स का उपयोग करते हुए सी एस ओ का अभिकल्प तैयार कर गुजरात सरकार को दिया। विभाग को *कैज्वरीना झुंघुहनियाना* के सुधारित बीजों की आपूर्ति की गई जिन्हें बीज उद्यान से एकत्र किया गया था और संस्थान द्वारा सामाजिक वानिकी प्रभाग के तहत रोपण कार्यक्रमों के लिए प्रबंधित किया गया था।

तमिल में जैव उर्वरकों और जैवखादों, तमिल में *मेलीना आर्बोरिया,* फ्रांकिया, वन अरिवियाल, तमिल त्रैमासिक समाचार पत्र, हिन्दी में व.आ.वृ.प्र.सं. विवरणिका तथा कैज्वरीना के लिए उत्पाद तालिका का प्रकाशन किया गया जिन्हें माननीय मंत्री, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वृक्ष उत्पादक मेला 2012 के दौरान अवमुक्त किया गया।

वी.वी.के. के अधीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

वी वी के कुथीरान, केरल

स्तरीय स्टॉक उत्पादन के लिए सूक्ष्म एवं वृहद प्रवर्धन तकनीकों पर 26 और 27 मार्च 2012 को वालायार वन प्रशिक्षण स्कूल केरल के वन रक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें 35 वन रक्षकों ने भाग लिया।

वालायार वन प्रशिक्षण स्कूल, केरल के वन रक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

वी वी के, पोर्ट ब्लेयर, अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह

पर्यावरण एवं वन विभाग, अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह के दिगलीपुर, मायाबंदर, मध्य अण्डमान, बारातांग तथा दक्षिण अण्डमान प्रभागों के चयनित अग्रगामी स्टॉफ और कार्मिकों के लिए वानस्पतिक सर्वेक्षण पर कार्यक्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। साथ ही, जलवायु परिवर्तन और वानिकी तथा रोपण तकनीकों पर कार्यक्षेत्रीय वन अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

पोर्ट ब्लेयर, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह में वी वी के, के तहत कार्यक्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

कांडियूर प्रदर्शन ग्राम

कांडियूर प्रदर्शन ग्राम के प्राइमरी स्कूल के बच्चों के लिए अप्रैल 2011 में 'पर्यावरण रक्षण' पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कुल 36 विद्यार्थियों ने भाग लिया। किसानों तथा स्वयंसेवी महिला सदस्यों के लिए 6 जनवरी 2012 को रोपण और पौधशाला में जैवउर्वरक उत्पादन और

कांडियूर प्रदर्शन ग्राम के तहत कार्यक्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

अनुप्रयोग, नाशीकीट तथा रोग प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

औद्योगिक कृषि वानिकी पर कांडियूर के किसानों के लिए 26 मार्च 2012 को इरोड और करूर का प्रदर्शन दौरा आयोजित किया गया। उन्हें तमिलनाडु न्यूज प्रिंट लिमिटेड, करूर और सीशासाई पेपर बोर्ड द्वारा ली गई रोपणों तक ले जाया गया और स्वपोषित रोपणियों तथा संविदात्मक कृषि से परिचित कराया गया।

सुधारित बीजों की आपूर्ति

व.अ.वृ.प्र.स. के बीज उद्यान से एकत्रित यूकेलिप्टस, कैज्वरीना और अकेसिया के करीब 14 कि.ग्रा. सुधारित बीजों को किसानों, वन विभागों और विभिन्न राज्यों के उद्योगों में वितरित किया गया।

बीजों और पौधों की आपूर्ति

दक्षिण भारत की विभिन्न अवस्थितियों में व.अ.वृ.प्र.स. द्वारा स्थापित बीज बागानों से यूकेलिप्टस और कैज्वरीना के करीब 28 कि.ग्रा.सुधारित बीज एकत्रित किए गए जिन्हें रोपणियां में उगाने के लिए उद्योगों, किसानों और राज्य वन विभागों में वितरित किया गया। स्थानीय स्रोतों से प्राप्त बीजों की बजाय इन बीजों का प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा। बीजों की बिक्री से राजस्व वर्ष 2011-2012 में रु. 2,21,000.00 का राजस्व प्राप्त हुआ।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर

- वी वी के कर्नाटक द्वारा कडुगोडी, बंगलौर में 18 अगस्त 2011 को एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें 23 उपरेंज वन अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया।
- वी वी के विस्तार क्रियाकलापों के अंतर्गत 23 से 25 फरवरी 2012 तक गोवा वन विभाग के अधिकारियों/किसानों/गैर सरकारी संगठनों/आरामशीन मालिकों/काष्ठ कर्म उद्योगों को निम्नलिखित विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया :
    - i. चंदन और बांस प्रवर्धन के लिए पौधशाला क्यारियां तैयार करने हेतु कार्यक्षेत्रीय प्रदर्शन
    - ii. बांस तकनीकों कम्पोजिटिंग तथा जैव उर्वरक तथा पौधशाला प्रबन्धन के लिए बांस तकनीकों की पौधशाला पद्धतियां, प्रसारण और खेती के बारे में प्रशिक्षण
    - iii. काष्ठ प्रक्रमण (संशलेषण, परिरक्षण एवं रक्षण) जिसमें मूल्य वृद्धि के लिए *एकेसिया औरीकुलीफार्मिस* तथा अन्य द्वितीयक प्रजातियों और छोटे घेरे के प्रकाष्ठों पर विशेष ध्यान दिया गया
    - iv. रस (काष्ठ) विस्थापन तथा बाउकेरी एकक का प्रयोग करते हुए बांस रक्षण का कार्यक्षेत्रीय प्रदर्शन
    - v. सुवाहय आसवन एकक का प्रदर्शन

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर

टीक निष्पत्रक तथा पर्ण-कंकालक की आपेक्षिक प्रतिरोध क्षमता के प्रदर्शन हेतु मध्य प्रदेश मूल के सागोन को प्रदर्शन ग्राम, मोयानाला में रोपित किया गया।

संस्थान द्वारा तीन वी वी के तथा एक प्रदर्शन ग्रामों की देखरेख की गई जिसके तहत विभिन्न क्रियाकलाप शामिल थे, यथा: प्रशिक्षण, मॉडल पौधशाला का विकास और अनुरक्षण तथा विभिन्न वानिकी क्रियाकलापों की प्रचार सामग्री का प्रकाशन। विचाराधीन अवधि के दौरान संबंधित राज्यों के वन विज्ञान केंद्रों द्वारा किसानों, अग्रगामी वन अधिकारियों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य हितधारकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अलावा संस्थान द्वारा वी ए एम फंगी के उपयोग तथा टीक क्लोन प्रतिरोधन के लिए विकसित तकनीकों का प्रदर्शन करने हेतु मोयानाला में प्रदर्शन ग्राम अनुरक्षित किया गया। अकाष्ठीय वन उत्पादों तथा कृषि वानिकी क्षेत्र में वर्मीकम्पोस्ट तथा अन्य तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए संस्थान द्वारा नजदीकी गांव, जमात्रा तथा बारहा में विस्तार क्रियाकलाप जारी रखे गए जिसके लिए व्यापक सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षणों के उपरांत चयनित ग्रामों से 10 किसानों का चयन करके 'वानिकी प्रसार द्वारा हितग्राहियों का उत्थान' पर 6 अक्टूबर 2010 को विकसित मॉडल के तहत कार्यशाला का आयोजन किया गया।

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट

वन विज्ञान केंद्र (वी वी के)

पांच उत्तर पूर्वी राज्यों में पांच वन विज्ञान केंद्र कार्यशील हैं यथा : असम, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैण्ड और त्रिपुरा। भा.वा.अ.शि.प. के दिशानिर्देशों के तहत वित्तीय वर्ष 2011-12 में विभिन्न क्रियाकलाप निष्पादित किए गए।

वन विज्ञान केंद्र, त्रिपुरा

वन विज्ञान केंद्र, त्रिपुरा द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार हैं :

- क्षमता वृद्धि/जे एफ एम सी सदस्यों के लिए वानिकी विस्तार/हितधारकों के लिए वन विज्ञान केंद्र, अगरतला में 3 से 7 जनवरी 2012, 10 से 14 जनवरी 2012, 17 से 21 जनवरी 2012 और 30 जनवरी से 3 फरवरी 2012 तक प्रशिक्षण दिए गए।
- प्रशिक्षण के दौरान किसानों को वी वी के क्रियाकलापों के पीछे की अवधारणाओं, उद्देश्यों और क्रियाकलापों के बारे में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण के दौरान निम्नलिखित विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया :

  i. अकाष्ठीय वन उत्पादों की व्यापार योजना की अवधारणा, कच्ची सामग्री की पहचान का महत्व तथा सतत प्रबंधन

  ii. स्वास्थ्य रक्षा के लिए स्थानीय औषधीय पादपों का महत्व

  iii. बांस और बेंत की मूल्य वृद्धि द्वारा जे एफ एम सी सदस्यों की क्षमता वृद्धि

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कालीबाजार बांस फर्नीचर निर्माण एकक का दौरा

  iv. स्थानीय औषधीय पादपों की मूल्य वृद्धि से जे एफ एम सी सदस्यों की क्षमता वृद्धि

  v. वर्मीकम्पोस्टिंग तकनीकें

  vi. इसके अतिरिक्त अगरबत्ती, फर्नीचर आदि सहित विभिन्न उद्योगों का दौरा किया गया और कार्यक्रम के तहत अनुसन्धान केंद्र स्थापित किए गए, यथा :

  (क) भूबनबन अगरबत्ती तैयार करने वाली एकक

  (ख) बांस की छड़ियां बनाने वाली एकक, टी आर आई बी ए सी, गांधीग्राम, हातीपरा

  (ग) पंचकर्मा अनुसन्धान एकक

  (घ) अनुसन्धान प्रभाग, हातीपरा में वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने वाली एकक

  (ड.) कालीबाजार बांस फर्नीचर उद्योग

  (च) टीला औषधीय पौधशाला, नेहरू पार्क

बांस छड़ निर्माण एकक, टी आर आई बी ए सी गांधीग्राम, हाथीपाड़ा का दौरा

अगरबत्ती निर्माण एकक, टी आर आई बी ए सी गांधी ग्राम, हाथीपाड़ा का दौरा

वी वी के पौधशाला का अनुरक्षण

अवमुक्त निधि से निम्नलिखित कार्य किए गए :

1. वर्मीकम्पोस्टिंग एकक का अनुरक्षण
2. बांस की बाड़ का अनुरक्षण
3. 200 मीटर लम्बाई के विद्युत आपूर्ति कनेक्शन की रचना
4. सात, जल आपूर्ति लिफ्टिंग पम्प बनाए
5. 1.5 हॉर्स पावर जल लिफ्टिंग पम्प की खरीद
6. वर्तमान 200 मीटर लम्बे वाटर पाइप की सफाई

वन विज्ञान केंद्र, नागालैण्ड

वी वी के, नागालैण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार हैं :

1. धारणीय प्रबंधन, उत्पाद वैविध्य और बांस का मूल्य वर्धन तथा वन्यजीव प्रबंधन पर एस ई एफ टी आई, दीमापुर, नागालैण्ड में 24 से 28 फरवरी 2012 तक प्रशिक्षण/कार्यशाला।
2. धारणीय प्रबंधन, उत्पाद वैविध्य और बांस की मूल्य वृद्धि तथा वन्यजीव प्रबंधन पर 12 से 16 मार्च 2012 तक सैनिक स्कूल, पुंगलावा, पेरिन, नागालैण्ड में प्रशिक्षण/कार्यशाला।

वी वी के पौधशाला का अनुरक्षण :

अवमुक्त निधि से निम्नलिखित कार्य किए गए :

I. ईंधन काष्ठ प्रजातियों को उगाना

II. मृदा कार्य, बीजों का प्रापण

III. मजदूरी प्रभार

IV. खाद आदि की लागत

प्रदर्शन ग्राम

विस्तार कैम्प तथा शेड-हाउस की स्थापना

प्रदर्शन ग्राम के लोगों के सहयोग से व.व.अ.सं. विस्तार कैम्प की सुविधा स्थापित की गई जिसका उपयोग प्रदर्शन ग्राम कार्यक्रमों के तहत विभिन्न विस्तार कार्यों में किया जा रहा है। पौधशाला की क्यारियों के साथ 21 मीटर × 10 मीटर का शेड हाउस बनाया गया है जिसके साथ वर्मीकम्पोस्ट एकक लगाए गए हैं। शेड हाउस का उपयोग विभिन्न तकनीकी क्रियाकलापों में किया जाता है जैसे बांस प्रवर्धन तथा अन्य स्तरीय स्टॉक को उगाना।

मिर्च आधारित कृषि वानिकी मॉडल का विस्तार :

फार्म में कृषि वानिकी अनुसन्धान करने के लिए व.व.अ.सं. तथा प्रदर्शन ग्रामों की पौधशाला में जो 10000 पादपिका पौधे उगाए गए थे उन्हें इच्छुक परिवारों को अपने गृह बगीचे में विभिन्न वृक्ष वितानों के नीचे उगाने के लिए दिया गया। मिर्च के लिए दो कृषि वानिकी मॉडल चयनित और प्रख्यापित किए गए यथा : मैंग्विन किंग चिली कृषि वानिकी मॉडल तथा अरेका नट-किंग चिली कृषि वानिकी मॉडल को प्रोत्साहित किया गया। फसल उगाने से काफी हद तक किसानों को लाभ हुआ।

अगर (*एक्वीलेरिया मैलासेन्सिस*) रोपणियों को उगाना तथा मस्कदाना की खेती:

पिछले वर्ष किसानों के विभिन्न खेतों में 2000 अगर पौधों की रोपणी उगाने की सफलता को देखते हुए जुलाई 2011 में पुनः 2000 पौधे रोपित किए गए। प्रायः सभी किसानों ने अगर के पौधों में रुचि दिखाई। कुछ किसानों को मस्कदाना उगाने के लिए प्रेरित किया गया जो सुगंध पादप है जिसका उपयोग विभिन्न रसायन संघटनों में किया जाता है।

आगंतुक उद्यमियों के साथ सम्पर्क सभा का आयोजन

प्रदर्शन ग्राम में कलकत्ता, पश्चिमी बंगाल से आए प्रमुख उद्यमी श्री राजसिंह के साथ सम्पर्क बैठक की गई जिन्होंने हाथोंहाथ भुगतान करके किसानों द्वारा उगाए गए उत्पादों को खरीदा।

दौरे

- डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. और कुछ अन्य उच्चाधिकारियों ने प्रदर्शन ग्राम का दौरा किया और जारी प्रदर्शन क्रियाकलापों का दौरा करते हुए किसानों तथा स्थानीय वन अधिकारियों से बातचीत की।
- डॉ. के. वॉन गेडो, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, जार्ज-अगस्त-यूनीवर्सिटी गोटिंगगन, जर्मनी ने प्रदर्शन ग्राम का दौरा किया तथा लाभार्थियों के साथ बातचीत की।

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा प्रदर्शन ग्राम का दौरा

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

प्रदर्शन ग्राम से मुख्य प्रशिक्षकों द्वारा कम लागत की वर्मीकम्पोस्ट बनाने का प्रशिक्षण :

जोरहाट जिले में बोर्खेजिया और बोरचुंगी गांव में दो प्रदर्शन सह प्रशिक्षण आयोजित किए गए। प्रदर्शन ग्राम के मुख्य प्रशिक्षकों ने वर्मीकम्पोस्टिंग की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया। प्रशिक्षणों को स्थानीय गैर सरकारी संगठनों के साथ मिलकर आयोजित किया गया। प्रदर्शन ग्रामों के मुख्य प्रशिक्षकों को विभिन्न सरकारी और गैरसरकारी संगठनों द्वारा नियमित रूप से रिसोर्स व्यक्ति आमंत्रित किया जा रहा है।

आर एफ आर आई – प्रदर्शन ग्राम विस्तार कैम्प

स्फैग्नम का उपयोग करते हुए विभिन्न आर्थिक महत्व की वृक्ष प्रजातियों के गुट्टी बांधने पर प्रशिक्षण :

तेईस जनवरी 2012 को कार्यक्षेत्रीय प्रदर्शन सहित प्रदर्शन ग्राम में प्रशिक्षण आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में 20 से अधिक ग्रामीणों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रशिक्षण और कार्यक्षेत्रीय प्रशिक्षण के बाद 20 से अधिक किसानों ने स्थल विशेष की दुर्लभ किंतु स्थानीय वृक्षों और झाड़ियों को बहुगुणित करने के लिए तकनीकों को अपनाया। इस प्रक्रिया को पादपों की 200 से अधिक उप प्रजातियों पर अनुप्रयुक्त किया गया जैसे *साइनोमोमम जेलान्सियम, सी. टमाला, लीची सिनैनसिस* तथा स्फैग्नम का उपयोग करते हुए सिटरस की विभिन्न प्रजातियां।

1. सुपारी के तहत भूतजोलाकियां की खेती, 2. *एकेसिया मैंजियम* पौधों का वितरण 3. मस्कदाना की खेती, 4. भारतीय सेना की इको–टास्कफोर्स के लिए वर्मी कम्पोस्टिंग का प्रदर्शन

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर

(क) बिछावल पौधशाला, बीकानेर (राजस्थान में) वी वी के

वी वी के कार्यों के बारे में राजस्थान वन विभाग कर्मियों के साथ कई बैठकें की गईं। बीकानेर राजस्थान वी वी के के तहत बिछावल, बीकानेर में उन्नत पौधशाला को (राजस्थान सरकार की मोहनगढ़ उपग्रह पौधशाला के साथ) 2009–10 में उच्चीकृत किया गया।

बिछावल बीकानेर में उन्नत पौधशाला का अनुरक्षण : (उन्नत) पौधशाला बिछावल, बीकानेर का अनुरक्षण किया गया है जिसके लिए धान की भुस्सी, कीटनाशक, बीज और पी वी सी पाइप का प्रापण कर लिया गया है।

1. **पौधे उगाना :** वी वी के के तहत (उन्नत) पौधशाला, बिछावल, बीकानेर में *प्रोसोपिस सिनरेरिया* और *डल्बर्जिया सिस्सू* के 3000 स्तरीय पौधों को उगाया गया है।
2. **विस्तार क्रियाकलाप :** वी वी के तथा प्रदर्शन क्रियाकलाप आफरी दर्पण में प्रकाशित किए गए (वी वी के/डी वी विशेषांक) वर्ष 9 खण्ड 4, अक्टूबर –दिसम्बर 2011 जिसे व्यापक प्रसार के लिए हितधारकों को दिया गया। उपग्रह पौधशाला, मोहनगढ़, जैसलमेर में वी वी के, बीकानेर के तहत किसानों/हितधारकों में प्रदर्शन के लिए ए सी एफ, डब्ल्यू, एफ पी, जैसलमेर को 12 डिस्प्ले बोर्ड दिए गए।
3. **वी वी के प्रशिक्षण :** किसान भवन, श्रीगंगानगर (राजस्थान) में 14 से 16 नवम्बर 2011 तक तीन दिवसीय वी वी के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कुल 67 सहभागियों ने (51 वन कर्मी तथा 16 किसान) ने प्रशिक्षण में सहभागिता की।

(ख) छिपादीं बीड़ी, राजकोट, गुजरात में वी वी के

1. **उन्नत नर्सरी का अनुरक्षण :** उन्नत नर्सरी, छिपादीं बीड़ी, राजकोट के अनुरक्षण कार्य का निष्पादन किया गया जिसके लिए गार्डन पाईप, फॉगर तथा उपसाधन, उर्वरक और कीटनाशकों का प्रापण किया गया।
2. **वी वी के प्रशिक्षण :** सिंह सदन, सासन, गिर, जूनागढ़ (गुजरात) में 17 से 19 अक्टूबर 2011 तक तीन दिवसीय वी वी के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें (30 वन कर्मियों तथा 35 किसानों) सहित कुल 65 व्यक्तियों ने भाग लिया।
3. **उच्च स्तरीय पौधे उगाना :** बीजों कलम किए गए, उच्च कोटि के 2500 पौधे तैयार किए गए यथा : *जिजीफस मार्शियाना, एम्बलिका आफिसिनेलिस* तथा *कार्डिया मिक्सा* और *कैज्वरीना इक्वीसिटीफोलिया*। प्रत्येक प्रजाति के बीजों और कर्तनों से न्यूनतम 500 पौधे, अनुसन्धान और विकास केंद्र, राजकोट की उन्नत नर्सरी में उगाए गए जिन्हें वी वी के के तहत किसानों/हितधारकों को दिया गया।
4. **विस्तार सामग्री :** आफरी दर्पण (विशेषांक वी वी के/ डी वी) वर्ष 9, खण्ड 4, अक्टूबर – दिसम्बर 2011 में वी वी के तथा प्रदर्शन क्रियाकलापों को प्रकाशित किया गया जिन्हें व्यापक प्रसार हेतु वी वी के राजकोट में प्रदर्शित किया गया।

(ग) खानवेल (दादर एवं नागर हवेली तथा दमन)

1. **वी वी के की स्थापना :** शु.व.अ.सं. तथा वन विभाग, दादर एवं नागर हवेली और दमन यू टी के बीच 24 जनवरी 2012 को सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। वन विज्ञान केंद्र का उद्घाटन श्री एस. के. अग्रवाल, मुख्य वन संरक्षण, वन विभाग, दादर एवं नागर हवेली और दमन, यू टी द्वारा किया गया।
2. खानवेल, सिलवासा, यू टी, डी एन एच में 24 और 25 जनवरी 2012 तक दो दिवसीय वी वी के प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें (15 वन कर्मियों और 15 किसानों) 30 सहभागियों ने सहभागिता की।
3. **विस्तार क्रियाकलाप :** अनुसन्धान निष्कर्षों का डिस्प्ले बोर्ड (हिन्दी और गुजराती) पहले से ही तैयार कर लिया गया है और विकसित तकनीकों को किसानों/हितधारकों के लिए रूढ़ाना नर्सरी, खानवेल, सिलवासा (डी एन एच) में प्रदर्शित किया गया। विविध साहित्य अर्थात: पत्रक, पैम्फलेट्स, विवरणिका और आफरी दपर्ण का प्रदर्शन रूदाना नर्सरी में किया गया।

रूदाना पौधशाला, खानवेल, सिलवासा में वी. वी. के प्रशिक्षणार्थी

प्रदर्शन ग्राम, सालावास (जोधपुर)

1. **स्थापना एवं सशक्तिकरण :** निदेशक, शु.व.अ.सं. तथा सरपंच, सालावास ग्राम, जोधपुर के बीच वन पौधशाला, सालावास, जोधपुर से जुड़ी अतिरिक्त भूमि के बारे में 30 मई 2011 को सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। सालावास ग्राम पंचायत द्वारा प्रदर्शन ग्राम के क्रियाकलापों हेतु 1.5 है. पंचायत भूमि दी गई। इस प्रकार सालावास प्रदर्शन ग्राम के क्रियाकलाप हेतु कुल 8.68 है. ग्राम पंचायत तथा वन भूमि उपलब्ध हो गई है।

2. **विस्तार क्रियाकलाप :** प्रदर्शन ग्राम सालावास, जोधपुर में 28 जुलाई 2011 को वन महोत्सव मनाया गया जिसमें सालावास ग्राम पंचायत तथा राज्य वन विभाग, जोधपुर ने भाग लिया। श्री मलखान सिंह विश्नोई, एम.एल.ए., लूनी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। श्री आई ए मुगल वन संरक्षक, जोधपुर तथा श्रीमती आकांक्षा चौधरी, जिला वन संरक्षक (वन्य जीव) जोधपुर को इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। लोगों को शु.व.अ.सं./सालावास ग्राम पंचायत द्वारा किए जा रहे क्रियाकलापों के प्रति जागरूक करने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन प्रदर्शन ग्राम स्थल, सालावास में किया गया। कृषि वानिकी को बढ़ावा देने तथा भूमि उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसानों *प्रोसोपिस सिनरेरिया* और *अजाडिराक्टा इंडिका* के 100 स्तरीय पौधे वितरित किए गए।

3. **प्रदर्शन स्थल में विकसित प्रौद्योगिकी/मॉडल्स का प्रदर्शन :** मॉडल नर्सरी तैयार की गई। राज्य वन विभाग नर्सरी सालावास, जोधपुर के पास प्रदर्शन के लिए एग्रोशेड, वर्मीकम्पोस्ट, डिच कम माउन्ड, कैटल प्रूफ ट्रेन्च और जीवंत वाड़ बनाई गई जिससे किसानों/हितधारकों को स्तरीय उत्पादन बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

प्रदर्शित स्थानिक जल संरक्षण तथा भू–जल के रिचार्ज होने और जैवविविधता पर उसके समाघात के लिए मृदा एवं जल संरक्षण उपाय यथा : रब्बल स्टोन चेक डैम और बी डिचेज का निर्माण किया गया। *काडिया घराफ* और *जिजीफस न्यूमूलेरिया* के साथ *सेंचुरस सिलोरिस* घास के सिल्वीपेस्टोरल मॉडल को स्वस्थानिक जल संरक्षण के साथ प्रदर्शन हेतु विकसित किया गया।

26 और 27 दिसम्बर 2011 को शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर में प्रदर्शन ग्राम प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें (22 वन कर्मियों और 20 किसानों सहित) 42 भागीदार शामिल हुए।

वृहद संचार सामग्री एवं मीडिया

- शु.व.अ.सं. की सूचना पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई जिन्हें अधिक प्रसार हेतु किसानों/हितधारकों को दिया गया।
- आफरी दर्पण : त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन किया गया। एक संयुक्त अंक (600 प्रतियां जनवरी से जून 2011) तथा दो अलग–अलग अंक (600 प्रतियां) प्रकाशित की गई और विभिन्न हितधारकों में वितरित की गईं।
- जनता में व्यापक प्रचार के लिए वी वी के और प्रदर्शन ग्राम के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिन्हें दैनिक स्थानीय समाचार पत्रों (हिन्दी और गुजराती) में प्रकाशित किया गया।
- वन महोत्सव के अवसर पर 500 हस्तपुस्तिकाएं मुद्रित करके हितधारकों में बांटी गई।
- सूचना के प्रचार के अधीन खेजरी की मृत्यता समस्या और उसके प्रबंधन पर (5000) विवरणिकाएं मुद्रित कर प्रसारित की गई।
- वी वी के/डी वी योजना के तहत व्यापक प्रसार क्रियाकलापों के लिए शु.व.अ.सं. द्वारा पैम्फलेट/फोल्डर (9000) प्रकाशित किए गए जिनमें अधिदेश, संस्थान के मुख्य कार्यक्षेत्र और शु.व.अ.सं. द्वारा विकसित तकनीकें एवं पैकेज शामिल थे।

किसान मेला/प्रदर्शनी/ट्रेड फेयर आदि में भागीदारी

संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों, अनुसन्धान क्रियाकलापों और परिणामों को प्रसारित करने के लिए जोधपुर तथा राजस्थान के अन्य स्थानों में आयोजित मेलों में भाग लिया जिनमें किसानों और अन्य उपभोक्ताओं को बड़ी मात्रा में प्रदर्शन सामग्रियां यथा : पोस्टर, पैनल्स, पुस्तकें, विवरणिकाएं/पत्रक/सूचना पुस्तिकाएं आदि वितरित किए गए।

(क) रावण का चबूतरा में 5 से 15 जनवरी 2012 तक आयोजित पश्चिमी राजस्थान हस्तशिल्प उत्सव में सहभागिता।

(ख) राज्य डी एस टी राजस्थान द्वारा 13 मई 2011 को झुनझुनू में आयोजित विज्ञान प्रौद्योगिकी दिवस में सहभागिता।

(ग) जयपुर में 26 से 31 दिसम्बर 2011 तक आयोजित 19वीं राष्ट्रीय बाल कांग्रेस में सहभागिता।

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला दो वी.वी.के. के द्वारा विस्तार क्रियाकलाप चला रहा है जिनमें से एक सुंदरनगर, हिमाचल प्रदेश और दूसरा जानीपुर, जम्मू में है। संस्थान ने विभिन्न हितधारकों के लाभ के लिए *प्रूनस सेरीसोडोइड्स* (पाजा), भारतीय जिप्सी मौथ – एक शत्रु कीट और *हिप्पोफाई रेम्नोइड्स* (चरमा) के बारे में एक-एक हजार सूचना पत्र प्रसारित किए हैं। ''वानिकी के विषय एवं समस्याएं : स्कूली बच्चों में जागरूकता'' विषय पर 5 जून 2011 तथा 'स्तरीय रोपण स्टॉक उत्पादन की आधुनिक प्रवृत्तियां' पर 24 जून 2011 को कार्यशाला का आयोजन किया। साथ ही 28 मार्च 2012 को वी. वी. के. सुंदरनगर में एच पी एस एक एफ डी के कार्यक्षेत्रीय कार्यकर्ताओं और स्थानीय किसानों के लिए 'औषधीय पादपों का सतत उपयोजन, संरक्षण और खेती' पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया और प्रशिक्षण दिया। ग्रामीण आय बढ़ाने और फसल वैविध्य के प्रयास से एफ आर एस ब्रुंधर कूल्लू (हि. प्र.) में उच्च उष्णकटिबंधीय औषधीय पादप प्रजातियां उगाई, जो इस प्रकार हैं : *पिकोराइजा कुरूआ, वैलिरियानी जटामांशी, एन्जीलिका ग्लुआका* तथा *पोडोफिलम हेग्जांड्रम* साथ ही जैवकृषि स्थापना को बढ़ावा दिया जा रहा है और विभिन्न हितधारकों के समक्ष वर्मीकम्पोस्ट एकक का प्रदर्शन किया। एफ आर एस में टाबो काजा के करीब 21000 बीज और पौधे उगाए गए जिनमें विभिन्न प्रजातियां हैं : *एलिशग्नस एंग्यूस्टीफोलिया, हिप्पोफाई रेहम्नोइड्स, कोल्यूटिया नेप्लन्सिस, राइब्स ओरियन्टल, रोसा वेबियाना* आदि। इसके अलावा पौधशाला अनुरक्षण क्रियाकलाप किए गए जैसे कार्यक्षेत्रीय रोपणियों में पानी देना, वर्ष के आरंभ में पॉलीहाउसों में टुलू पंप स्थापित करना आदि। पापलर क्लोन्स (16 न.) का पापलर जर्मप्लाज्म बैंक स्थापित किया गया जिसे वी वी के जानीपुर (जम्मू एवं कश्मीर) के उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न अंत उपभोक्ताओं के लिए बहुगुणित किया गया। प्रदर्शन पौधशाला में विभिन्न औषधीय और वानिकी प्रजातियां उगाई और अनुरक्षित की गई।

प्रदर्शन ग्राम, लानाबांका, हिमाचल प्रदेश

संस्थान द्वारा प्रदर्शन ग्राम लानाबांका, सिरमौर (हि. प्र.) में दिनांक 25 सितम्बर 2011 को कार्यशाला सह–ग्रामीणों की बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान मक्का सीलेज बनाने तथा जैवकृषि का प्रदर्शन करने के लिए बाहर से विशेषज्ञ भी बुलाए गए। ग्रामीणों के विशेष आग्रह पर मृदा अपरदन को रोकने के लिए एक हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न दूरियों पर बांस और पॉलवानिया की मिश्रित रोपण स्थापित की गई और मृदा अपरदन रोकने के लिए *वालरियाना जटामांसी* तथा *एलोवेरा* की धारीदार रोपणें, बांस और पॉलवानिया के साथ 0.5 है. में अंत:फसल के रूप में रोपित की गई। नियमित निराई गुड़ाई और सिंचाई के द्वारा प्रदर्शन पौधशाला और रोपणियों का अनुरक्षण किया गया तथा विभिन्न हितधारकों को दिखाने के लिए वर्मीकम्पोस्ट एकक का उत्पादन और अनुरक्षण किया गया।

4.2. हस्तांतरित प्रौद्योगिकियां

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा प्रयोगशाला में विकसित और सुधारित अगरबत्ती बंधन सामग्री को मैसर्स आनंद अगरबत्ती, नागपुर को ₹ 2.5 लाख की राशि लाइसेंस फीस के रूप लेकर में 29 जून 2011 को दी गई।

बांस पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, 31 मार्च 2012 को सा.वा.पा.प्र.क., इलाहाबाद के वैज्ञानिकों द्वारा सैयदपुर प्रदर्शन ग्राम के किसानों को बांस प्रवर्धन प्रौद्योगिकी हस्तांतरित की गई।

ब्लॉक बोड्र्स में जिबॉक का अनुप्रयोग औद्योगिक स्तर पर किया जा रहा है।

डॉ. एस.एस. नेगी, निदेशक, व.अ.सं. मैसर्स आनंद अगरबत्ती नागपुर को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का प्रमाण पत्र देते हुए

पोषक मशरूम *गेनोडर्मा ल्यूसीडियम* की खेती की तकनीक, किसानों, मशरूम उत्पादकों, गैरसरकारी संगठनों और उद्योगों को हस्तांतरित की गई है (71 नं.)।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

'व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर - तीव्र वृक्ष-वृद्धि (वी ए एम जैव उर्वरक)' नामक उत्पाद का विकास किया गया जिसे माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार द्वारा 23 फरवरी 2012 को व.अ.व.प्र.स. द्वारा आयोजित 'वृक्ष उत्पादक मेला 2012' के दौरान अवमुक्त किया गया। उत्पाद को विभिन्न हितधारकों खासकर राज्य वन विभागों, किसानों और वृक्ष उत्पादकों में वितरित किया गया।

चंदन + नींबू वृक्ष आधारित वन-बागवानी कृषि वानिकी पद्धति का आकलन और हस्तांतरण किया गया।

वानिकी प्रजातियों की बीज प्रहस्तन तकनीक को पोस्टरों और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा किसानों और वानिकों में हस्तांतरित किया गया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर

'आरबीसक्यूलर माइकोरिजियल फंगी - वानिकी में जैव उर्वरक के रूप में' तकनीक का मानकीकरण किया गया और वानिकी तथा गैर सरकारी संगठनों में हस्तांतरण किया गया।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर

संस्थान अधीनस्थ, वी.वी.के. तथा प्रदर्शन ग्रामों द्वारा संस्थान में विकसित तकनीकों का किसानों, अग्रगामी वन कर्मियों, गैर सरकारी संगठानों तथा अन्य हितधारकों के समक्ष प्रदर्शन किया गया। इसके अतिरिक्त किसान मेला, विज्ञान मेला और अन्य संबद्ध मंचों, संगठनों और निकायों द्वारा समय-समय पर आयोजित अवसरों पर तकनीकों का हस्तांतरण किया गया। संस्थान के क्रियाकलापों का प्रदर्शन विशेष आगुंतकों, विभिन्न राज्यों के प्रशिक्षु वानिकों, विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों के विद्यार्थियों तथा विभिन्न स्थानों से आए आगुंतकों के समक्ष किया गया। कुल मिलाकर संस्थान द्वारा चालू वर्ष में ग्यारह प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

5 जुलाई 2011 को प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान खेतों में जाकर जामतारा-पारास्वरा और बुरहा गांव के किसानों के समक्ष प्रदर्शन और प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत उच्च उत्पाद देने वाली हल्दी की तकनीक का हस्तांतरण किया गया।

प्रदर्शन ग्राम-बुरहा, जिला, जबलपुर (म.प्र.) में कार्यक्षेत्रीय प्रदर्शनों द्वारा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण

किसानों को प्रशिक्षण और प्रदर्शन द्वारा बांस आधारित सिल्वी-एग्री, सिस्सू-मक्का, सिल्वी-एग्री, पद्धति और सात्रोन-हल्दी सिल्वी-औषधीय संयोजन अपनाने हेतु प्रेरित किया गया।

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट

कार्यक्षेत्र में निम्नलिखित प्रौद्योगिकियाँ हस्तांतरित की गई :

- पी आर ए तकनीक तथा माइक्रोप्लानिंग
- बांस उपचार
- वर्मीकम्पोस्ट
- मधुमक्खी पालन
- पचौली-एग्रो प्रौद्योगिकी
- ट्राईकोडर्मा उत्पादन तथा कार्यक्षेत्रीय अनुप्रयोग
- माइकोरिजियल तकनीकें
- जैवकीटनाशक उत्पादन और कार्यक्षेत्रीय अनुप्रयोग
- बीज प्रहस्तन - श्रेणीकरण तथा बुआई
- मिर्च आधारित कृषि वानिकी मॉडल की प्रौद्योगिकी
- स्फेगम का प्रयोग करते हुए आर्थिक महत्व की विभिन्न वृक्ष प्रजातियों का वायु परतीकरण
- कम लागत की वर्मीकम्पोस्ट पर प्रौद्योगिकी
- अर्गर (*एक्वीलेरिया मेलासिन्सिस*) रोपणियों को उगाने की प्रौद्योगिकी तथा मस्कदाना की खेती

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर

प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा की भूतल से ऊपर ($\sqrt{W} = a + bD$) तथा भूतल के अन्दर ($W = a + bD^2$) के आकलन के लिए प्रतिगमन विकसित किया। यहां डी. पी. जूलीफ्लोटा वृक्ष का कालर व्यापक व्यास और a & b प्रतिगमन घटक है।

अरावली में वर्षा जल एकत्रण पद्धतियों को प्रचार और हितधारकों द्वारा दोहराने के लिए विकसित करके प्रदर्शन ग्रामों के क्रियाकलापों में शामिल किया गया है।

4.3. अनुसन्धान प्रकाशन

भा.वा.अ.शि.प. के अनुसन्धानकर्ताओं ने विभिन्न पत्रिकाओं में 318 अनुसन्धान लेख प्रकाशित किए हैं जिनमें 115 लेख विदेशी पत्रिकाओं में छपे हैं। सम्मेलनों/संगोष्टियां/सेमीनारों/कार्यशालाओं की कार्रवाईयों में तीन सौ सत्रह अनुसन्धान प्रलेख प्रस्तुत/प्रकाशित किए गए। इसके अलावा 17 पुस्तकें/मैनुअल्स/पैम्फलेट्स/लघु पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई और समेकित पुस्तकों में 54 अध्यायों का योगदान किया गया।

सूचना एवं जैव प्रौद्योगिकी के लिए राष्ट्रीय केन्द्र, यू एस ए द्वारा सिलिंड्रोक्लेडियम क्विंक्वेस्पेटेटम के 26 फगल आर-डी एन ए जीन्स आइसोलेट्स को प्राप्ति-क्रमांक दिए।

4.4. आयोजित किए गए सेमीनार/संगोष्ठी/कार्यशालाएं

सेमीनार

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 22 और 23 सितम्बर 2011 को फंगल जैवप्रौद्योगिकी की नई खोजों पर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया।

व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा 21 और 22 मार्च 2012 को वन स्वास्थ्य प्रबंधन (एफ.एच.एम. 2012) पर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया।

का.वि.प्रो.स., बंगलौर द्वारा का.वि.प्रो.स. में काष्ठ आधारित उद्योगों के लिए एम एस एम ई-डी सी एस के तहत राष्ट्रीय अभिकल्प संस्थान, बंगलौर के सहयोग से 13 सितम्बर 2011 को 'अभिकल्प संवेदीकरण कार्यक्रम' पर एक दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने 'नाशीकीट और रोग : घटनाएं और वन पारिपद्धति में प्रबंधन' पर 25 और 26 मई 2011 को दो दिवसीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार में भारतवर्ष के 40 प्रतिष्ठित वन रोग तथा वन कीटविज्ञानी मौजूद थे। सेमीनार का उद्घाटन श्री विनय टंडन, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक, हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा किया गया।

कार्यशालाएं

उत्तराखण्ड के प्रभावशाली विकास के लिए ज्ञान का आदान-प्रदान सुदृढ़ करने हेतु भा.वा.अ.शि.प. -आई डी एस द्वारा भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में 9 से 12 अक्टूबर 2011 तक सहयोगात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा राष्ट्रीय कार्ययोजना कोड के संशोधन हेतु 2 और 3 मार्च 2012 को कार्यशाला सह-बैठक का आयोजन किया गया।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 18 जुलाई 2011 को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली में 'प्रारंभिक एकत्रकों को शुद्ध आर्थिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए अकाष्ठीय वन उत्पादों के वाणिज्यिक उत्पादन पर राष्ट्रीय अध्ययन' पर राष्ट्रीय-परामर्शी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा हिमालय में जलवायु परिवर्तन और वानिकी अनुसन्धान आवश्यकताओं पर 24 और 25 अक्टूबर 2011 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा 'पेटीरोकार्पस सैंटालिन्स पर अहानिकर निष्कर्ष अध्ययन - पेटीरोकार्पस' पर 29 जुलाई 2011 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा 'भारत में वन किस्मों का आकलन' पर 2 फरवरी 2012 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा एस ओ डब्ल्यू - एफ जी आर पर वन आनुवंशिकी संसाधनों पर देश की रिपोर्ट तैयार करने के लिए 7 और 8 फरवरी 2012 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा 'सतत आजीविका के लिए वृक्ष कृषि' पर वृक्ष उत्पादकों का मेला 2012 के भाग के रूप में 23 और 24 फरवरी 2012 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

का.वि.प्रौ.सं. बंगलौर द्वारा आंध्र प्रदेश वन अकादमी में 29 जुलाई 2011 को आंध्र प्रदेश के काष्ठ क्षेत्र पर विचार-विमर्श हेतु बैठक का आयोजन किया गया। काष्ठ क्षेत्र से कारपेंटरी, आरामशीन,

आर्टीसन, तारकोल सैक्टर सहित 70 भागीदार शामिल हुए। कार्यशाला का आयोजन का.वि.प्रौ.सं. तथा ए पी एफ ए द्वारा किया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा 'साल अंत:काष्ठ छेदक और उसका प्रबंधन' पर 30 नवम्बर 2011 को रायपुर तथा 24 फरवरी 2012 को जगदलपुर में कार्यशाला सह–प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा 'अचानकयार–अमरकंटक जैवमण्डल रिजर्व' पर बिलासपुर में 3 मार्च 2012 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा 'सतत आजीविका के लिए उन्नतशील कृषि वानिकी पद्धति' पर 28 सितम्बर 2011 को कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 13 प्रलेख प्रस्तुत किए गए और विभिन्न भू–स्थितियों तथा विभिन्न कृषि जलवायुवीय मॉडलों के लिए उपयुक्त कृषि वानिकी माडलों पर विचार–विमर्श किया गया। इस अवसर पर बेरी, ननीता तथा नेगी एम.एस. द्वारा प्रस्तुत उ.व.अ.सं. प्रकाशन पी पी 1–100 'सतत आजीविका के लिए उन्नतशील कृषि वानिकी पद्धति' पर पुस्तिका का विमोचन किया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा 2 और 3 मार्च 2012 तथा 22 और 23 मार्च 2012 को 'मूल्यवान खाद्य उत्पाद तथा महुआ के फूलों का प्रक्रमण' पर दो दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें छिंदवाड़ा की विभिन्न वन समितियों के स्वावलम्बी वर्ग की महिलाओं की लक्ष्य समूह थी।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा 9 और 10 जून 2011 को उ.व.अ.सं., जबलपुर में 'वानस्पतिक पद्धतियों में ऊर्जा मात्रा विनिमय' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें दूसरों, एम पी सी एस टी, सी ए जेड आर आई, व.अ.सं. तथा उ.व.अ.सं. के वैज्ञानिकों तथा राज्य वन विभागों और मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय पार्कों के अधिकारियों ने भाग लिया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 'बांस' पर 4 और 5 नवम्बर 2011 को राष्ट्रीय बांस मिशन द्वारा प्रायोजित जिला स्तरीय बांस कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम वन तथा भूमि संसाधन सर्वेक्षण में अनुप्रयोग पर 13 से 16 फरवरी 2012 को व.व.अ.सं. जोरहाट में कार्यशाला–सह– प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसे राज्य पर्यावरण एवं वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, दीमापुर, नागालैण्ड सरकार द्वारा प्रायोजित किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 'यत्र–तत्र फैली हुई वनस्पतियों, पादप विविधता तथा जीविकोपार्जन सुरक्षा' पर 13 फरवरी 2012 को झांझीमुख जटिया विद्यालय, जोरहाट में कार्यशाला का आयोजन किया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा राजस्थान राज्य डी एस टी, जयपुर और शु.व.अ.स., जोधपुर के सहयोग से 25 मई 2011 को आई पी आर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा शुष्क और सम शुष्क क्षेत्रों (सी पी– ए एस ए आर) पर अखिल भारतीय सम्नवित कार्यक्रम के सूत्रवृद्धीकरण हेतु 4 और 5 अगस्त 2011 को आफरी, जोधपुर में विचार मंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा सतत भूमि पारिपद्धति प्रबंधन – भारत में देशज भागीदारी कार्यक्रम तथा तीसरी राष्ट्रीय संचालन समिति (एन.एस.सी.) की बैठक 2012 पर शु.व.अ.स., जोधपुर में 27 और 28 फरवरी 2012 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा 24 जून 2011 को हिमाचल प्रदेश के राज्य वन विभाग के कार्यक्षेत्रीय कर्मियों के लिए 'पौधशाला तकनीकों में आधुनिक प्रवृत्तियां' पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें शिमला, रामपुर, नहान और बिलासपुर सर्कल के 35 कार्यक्षेत्रीय कर्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा 'धारणीय उपयोजन, संरक्षण एवं महत्वपूर्ण औषधीय पादपों की खेती' पर 27 जुलाई 2011 को जिला वन अधिकारी ऑफिस के लोगों में किसानों तथा हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग के कार्यक्षेत्रीय कर्मियों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 50 लोगों ने भाग लिया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा भा.वा.अ.शि.प. की पहल पर 17 अगस्त 2011 को शिमला में मुख्य विषय 'वन तथा जलवायु परिवर्तन' पर एक दिवसीय प्री–कांग्रेस कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य विषय के साथ अन्य उप विषय भी शामिल थे जैसे हरित भारत का उद्देश्य : सुअवसर तथा चुनौतियां, न्यूनीकरण/ अनुकूलन तथा चुनौतियां, पारिपद्धति समुत्थान तथा वन जैव विविधता, जलवायु परिवर्तन मॉडल्स/वन एवं कार्बन स्राव, कार्बन संतुलन : नीति निर्धारण एवं भारत और रेड। कार्यशाला में शामिल प्रतिनिधियों में हिमाचल प्रदेश और जम्मू–कश्मीर वन विभाग के अधिकारी, विश्वविद्यालयों, केंद्रीय अनुसन्धान संगठनों के वैज्ञानिक और देश के विभिन्न भागों से आए गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि शामिल थे।

कार्यशाला के अंत में 'कालाटॉप खजियार, वन्यजीव अभ्यारण चम्बा, हिमाचल प्रदेश : पादप वैविध्य का परिचय' पर डॉ. आर. के. वर्मा तथा डॉ. के. एस. कपूर द्वारा रचित पुस्तक को श्री विनय टंडन, सलाहकार (वानिकी) हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा विमोचित किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा प्रदर्शन ग्राम लानाबांका के हितधारकों के साथ 25 सितम्बर 2011 को लानाबांका ग्राम पंचायत हॉल, जिला सिरमौर (हि. प्र.) में कार्यशाला/ग्रामीणों की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें 45 भागीदारों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा 2 सितम्बर 2011 को नेटवर्क सहयोगियों के लिए परियोजना कार्यान्वित करने बाल 'आबादी आकलन एवं *पिकरोराइजा कुर्वा* रॉयल एक्स बेंथ एवं *वेलीरियाना जटामांसी* जोन्स पर उत्तर पश्चिमी हिमालय (हि. प्र. तथा उत्तराखण्ड) की विभिन्न आबादियों का विश्लेषण' पर कार्यशाला /बैठक का आयोजन किया गया।

व.अ.सं., रांची द्वारा 'खाद्य तनों के उत्पादन और प्रक्रमण हेतु बांस की खेती' पर 30 अगस्त 2011 को 'अंतर्राष्ट्रीय अरण्य वर्ष' 2011 के अवसर पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.अ.सं., रांची द्वारा 'फासी (*एनोगेसिस एक्यूमीनेट*) कैन्डीडेट धन वृक्ष चयन' पर 'फासी (*एनोगेसिस एक्यूमीनेट*)' का वन संवर्धनिक अध्ययन (रॉक्सब एक्स डी सी) ग्वील एवं पर्र उड़ीसा' परियोजना के तहत 11 जनवरी 2012 को ओ एफ एस डी पी, भुवनेश्वर में कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसे उड़ीसा वानिकी क्षेत्र विकास परियोजना, भुवनेश्वर द्वारा निधिकृत किया गया था।

'बांस के खाद्य तना उत्पादन तथा प्रक्रमण हेतु बांस की खेती' पर कार्यशाला

संगोष्ठी

व.अ.सं., रांची द्वारा 'जैव प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों द्वारा वन आनुवंशिक स्रोतों का आकलन और संरक्षण' पर 19 और 20 दिसम्बर 2011 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें देश के 100 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया और प्रलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दौरान उपस्थित प्रतिनिधि

सम्मेलन

'आर्ट एण्ड जॉय आफ वुड – रिडिस्कवरिंग वुड : सतत् भविष्य की कुंजी' पर एफ ए ओ तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा 19 से 22 अक्टूबर 2011 को भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर के जे एन टाटा सभागार परिसर में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सम्मेलन एवं प्रदर्शनी, अंतर्राष्ट्रीय वन वर्ष मनाने की एक वैश्विक कड़ी थी, जिसका उद्देश्य सतत भविष्य के लिए काष्ठ को उत्तम उपयोग की आवश्यकता पर बल देना था। काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तथा भारतीय प्लाईवुड औद्योगिक अनुसन्धान संस्थान क्रमशः सम्मेलन और प्रदर्शनी के स्थानीय आयोजक थे। अंतर्राष्ट्रीय काष्ठ संवृद्धि सोसाइटी तथा वन अनुसन्धान संगठनों की अंतर्राष्ट्रीय यूनियन द्वारा सम्मेलन में योगदान दिया गया। सम्मेलन के आयोजन का उद्देश्य काष्ठ उत्पादों के प्रयोग को प्रभावित करने वाली सामाजिक–आर्थिक प्रवृत्तियों, काष्ठ के व्यापक उपयोजन से पैदा होने वाले चुनौतियों तथा सुअवसरों की खोज के लिए किया गया। सम्मेलन में विभिन्न 31 देशों के 270 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और काष्ठ के परम्परागत, सामाजिक, श्रृंगारिक और सांस्कृतिक उपयोग पर विचार–विमर्श किया तथा परम्परागत पहलुओं कि किस प्रकार काष्ठ सैक्टर में भविष्य में विकास के लिए काष्ठ तथा समाज के बीच की सम्बद्धता को जोड़ा जा सकता है।

सम्मेलन का उद्घाटन श्री एस. सुरेश कुमार, माननीय कानून, शहरी विकास, संसदीय मामले एवं बी डब्ल्यू एस एस बी मंत्री, कर्नाटक सरकार द्वारा किया गया तथा श्री जीतेंद्र चौधरी, माननीय वन एवं उद्योग मंत्री, त्रिपुरा सरकार ने समारोह की अध्यक्षता की। उद्घाटन समारोह में, डॉ. पी. जे. दिलीप कुमार, डी जी एवं एस एस, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., डॉ. आर. माइकल मार्टिन, निदेशक, एफ ए ओ, रोम एवं डॉ. हावर्ड रोजन, आई. डब्ल्यू. सी. एस., चीन, श्री एस. सी. जोशी, तथा डॉ. सी. एन. पाण्डे महत्वपूर्ण व्यक्तियों के रूप में उपस्थित थे। सम्मेलन में कई वरिष्ठ नीति निर्धारकों, अनुसन्धानकर्ताओं, भारत और विश्व भर के काष्ठ उद्योगों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में कुल 70 मौखिक प्रस्तुतियां दी गई तथा 30 पोस्टर प्रस्तुत किए गए।

4.5. परामर्शी

पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग ने कथित अवधि के दौरान पड़ोसी देश रॉयल भूटान सरकार को जल विद्युत परियोजना हेतु परामर्शी सहायता को बढ़ा दिया। परिषद् में अनुभवी और स्तरीय विशेषज्ञों की उपलब्धता को देखते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय, भारत ने भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् को बेल्लारी, टुमकुर और चित्रदुर्ग, कर्नाटक के लोह अयस्क खनन प्रभावित जिलों में वृहद स्तर पर पर्यावरण प्रबन्धन आकलन करने का निर्देश दिया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय को विहित समय के भीतर अध्ययन रिपोर्ट दी गई और माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संस्तुतियों को समग्र रूप से लागू कराया गया। कर्नाटक सरकार ने बेल्लारी, चित्रदुर्ग और टुमकुर, खनन प्रभावित जिलों में भूमि सुधार और पुनर्स्थापन योजना के अध्ययन के कार्य परिषद को दिया है। उड़ीसा खनन कार्पोरेशन लिमिटेड ने उड़ीसा के जाजपुर जिले में क्षमता अध्ययन करने हेतु भा.वा.अ.शि.प. से सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। ऊर्जा निदेशालय, हिमाचल प्रदेश सरकार के साथ हस्ताक्षरित एम.ओ.यू. के आधार पर भा.वा.अ.शि.प. द्वारा हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी घाटी में जल विद्युत परियोजनाओं का समग्र पर्यावरणीय संघात आकलन किया जायेगा। सतलुज नदी घाटी में संयुक्त संघात आकलन अध्ययन हेतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रूड़की, पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास के सलीम अली केंद्र, कोयम्बटूर तथा शीत जल मत्स्य अनुसन्धान निदेशालय, भीमताल, उत्तराखण्ड भी इसमें सहयोगी होंगे।

चालू वित्त वर्ष में निम्नलिखित परामर्शी कार्य पूरे किए गए हैं:

क. पूर्ण किए गए परामर्श :

1. संकोश जल विद्युत परियोजना (4060 एम डब्ल्यू) डंगना ड्ज़ोंखेग (जिला) भूटान, टी एच डी सी भारत लिमिटेड ऋषिकेश के लिए व्यापक पर्यावरण प्रभाव आकलन–पर्यावरण प्रबन्धन योजना।
2. हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले में कुठेर एच ई पी (240 एम डब्ल्यू) के लिए आवाह क्षेत्र उपचार योजना। जिंदल दक्षिण पश्चिम ऊर्जा लिमिटेड, मुम्बई।
3. कर्नाटक के खनन प्रभावित जिलों बेल्लारी, चित्रदुर्ग और टुमकुर में वृहद स्तरीय पर्यावरण प्रभाव आकलन।

बेल्लारी जिले में खान स्वामियों से बातचीत करते हुए ई आई ए का दल

बेल्लारी जिले में अप्रबन्धित तनाव निपात

रावी नदी का आवाह क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश

व.अ.सं., देहरादून

जखोल-सांकरी एच ई पी (51 एम डब्ल्यू), मोरी, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड में जन सांख्यिकीय तथा सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण

जखोल-सांकरी जल विद्युत परियोजना उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले में स्थित है जिसमें नदी किस्म की परियोजना के तहत विद्युत उत्पादन के लिए सुपिन नदी का पानी उपयोग में लाया जाता है। सुपिन नदी टांस नदी की सहायक नदी है। प्रभाग द्वारा प्रस्तावित परियोजना क्षेत्र के सात गांवों के जनसंख्यात्मक तथा सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण का अध्ययन किया जा रहा है जिसमें आधार रेखा आंकड़े प्रलेखित करने के लिए करीब 525 घरों को कवर किया जा रहा हैं।

पौताला गांव के ग्रामीण

सुन्कुन्डी गांव

चिरगांव-मझगांव एच ई पी (60 एम डब्ल्यू), रोहरू, हिमाचल प्रदेश में ईआई.ए-ई, एमपी तथा एस आई ए अध्ययन

हि.व.अ.स., शिमला द्वारा चिरगांव-मझगांव (60 एम डब्ल्यू) एच ई पी, रोहरू, हिमाचल प्रदेश पावर कारपोरेशन लिमिटेड के लिए ई आई ए, ई एम पी तथा एस आई ए के समाघात अध्ययनों को अपने हाथ में लिया गया है। चिरगांव-मझगांव एच ई पी को पब्बार नदी पर ऊर्जा उत्पादन विकास के रूप में अपेक्षित किया जा रहा है जो हिमाचल प्रदेश में चिरगांव/रोहरु से करीब 110 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। भौतिक और जीवविज्ञानीय अध्ययन प्राय: पूरे किए जा चुके हैं और सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण प्रारंभ किए गए हैं।

बैराज और जलाशय का दृश्य

ग्राम शक्तिनगर (रोहरू) के पास पब्बार नदी

रेणुका बांध परियोजना, हिमाचल प्रदेश का आधार रेखा सर्वेक्षण तथा एस आई ए

कुल 3666 घरों का सर्वेक्षण किया गया जो 17 पंचायतों के 77 गांवों में समाहित हैं। कुल घरों में से 987 घर मुख्य परियोजना प्रभावित परिवारों के हैं 232 घर, परियोजना प्रभावित परिवारों के हैं

तथा 1447 घरों को अन्य निवासी परिवारों की श्रेणी में रखा गया है। आधार रेखा सर्वेक्षण रिपोर्ट तथा एस आई ए रिपोर्ट पहले ही परियोजना प्राधिकारी को सौंप दी गई है।

रेणुका बांध का दृश्य

- अधिकारी/वैज्ञानिकों ने उत्तराखण्ड वन विभाग द्वारा 'साल - ए एन आर' परामर्शी सेवाओं में काम किया।
- मैसर्स सुनोरा टाइल्स प्राइवेट लिमिटेड, मोरबी (गुजरात) ने कागज बनाने के लिए *प्रौसोपिस ज्यूलीफ्लो* को मूल्यांकित करने के लिए अनुसन्धान कार्य दिया।
- केंद्रीय लुग्दी एवं कागज अनुसन्धान संस्थान (सी.पी.पी.आर.आई.), सहारनपुर (उ. प्र.) की ग्यारहवीं और बाहरवीं पंच - वर्षीय योजना को परामर्शी के एक भाग के रूप में रूप में मूल्यांकित किया है और रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है।
- पिछले वर्ष उ. प्र. निर्यात कारपोरेशन लिमिटेड, सहारनपुर की सीमा में दस भाप-उष्मन किस्म के भट्टों का आधुनिकीकरण करके पुनर्स्थापन किया गया है। वर्ष के दौरान परामर्शी सेवा के पूर्ण होने पर एक वर्ष की तकनीकी सेवा की गई।
- 'जैव - कीटनाशक फोटोराब्डस लाइमंसींस अखुरस्ताई स्ट्रेना के आई - 52 वी/वी ई सी' पर (अक्टूबर 2010 से जुलाई 2011 तक) निर्मल बीज प्राइवेट लिमिटेड, पचोरा-जलगांव, महाराष्ट्र, भारत से दस महीने की परामर्शी सेवा ली गई।
- ता प्रोहम मंदिर, कम्बोडिया तथा ए.एस.आई. में वृक्षों के संरक्षण पर ए.पी.एस.ए.आर.ए. प्राधिकरण से परामर्शी सेवाएं ली गई।
- बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति को बोधिवृक्ष, बोधगया के अनुरक्षण और संरक्षण पर परामर्शी सेवा दी गई।

साइमरीप कम्बोडिया में वृक्षों के उपचार हेतु आयोजित कार्यशाला में परियोजना टीम के साथ ए पी एस ए आर ए अथॉरिटी, कम्बोडिया के प्रशिक्षणार्थी

ता प्रोहम मंदिर, कम्बोडिया में *इरंग्विया मलायाना* के वृक्ष के घावों का उपचार करते हुए

- बिड़ला लाओ लुग्दी एवं कागज कंपनी, लाओस को कार्यक्षेत्र में 22 से 27 मई 2011 तक यूकेलिप्टस रोपणियों के बारे में परामर्शी सेवा दी गई।
- टॉलीगंज क्लब कलकत्ता को 26 से 28 नवम्बर 2011 तक वृक्षों के स्वास्थ्य और प्रबंधन की स्थिति पर परामर्शी सेवाएं दी गई।
- *डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस* तथा पॉपलर के रोगों के प्रबंधन (अंतर्राष्ट्रीय पेनेसिया लिमिटेड, दिल्ली) हेतु वाणिज्यीकृत जैव उर्वरकों और जैवकीटनाशकों की क्षमता का परीक्षण किया गया।
- मुकुला देवी मंदिर, उदयपुर, लाहौल और स्पीति, जिला, हिमाचल प्रदेश (एएसआई, शिमला) को परामर्शी सेवाएं दी गईं।

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर

थीरूविद्यांती में अरूलमिगू नित्यकल्याणी पेरूमल मंदिर भूमि में तमिलनाडु कागज एवं न्यूजप्रिंट लिमिटेड के लिए उगाई गई कैज्वरीना रोपणियों के उत्पाद का आकलन किया गया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

- डॉ. ओ. के. रेमादेवी तथा डॉ. सुंदरराज द्वारा 2 अगस्त 2011 को जैवकीटनाशकों के सूत्रबद्धीकरण पर विचार विमर्श करने हेतु नेचुरल रिमेडी, बंगलौर का दौरा किया गया।
- डॉ. एस. के. शर्मा, प्रधान एवं वैज्ञानिक 'एफ' तथा डॉ. एस. आर. शुक्ला, वैज्ञानिक 'ई' द्वारा 17 और 18 सितम्बर 2011 तक थांडलू की स्थापना और टिकाऊपन सामर्थ का निरीक्षण करने हेतु प्रभागीय वन अधिकारी के साथ टी टी देवास्थान, तिरूमाला का दौरा किया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

संस्थान द्वारा हितधारकों को परामर्शी सेवाओं के रूप में अपनी सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है। अवधि के दौरान एन टी पी सी को उनके अनुरोध पर पर्यावरण नीति के सूत्रवृद्धीकरण, रणनीति और दिशानिर्देश पर सेवाएं दी गई हैं।

'हरित आच्छादन के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष लाभों और एन सी पी पी – दादरी परियोजना' के लिए वृक्षाच्छादन प्रबंध योजना पर अध्ययन किए जा रहे हैं।

एन टी पी पी – करोबा परियोजना के लिए हरित आच्छादन का आलकन और उसके प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष लाभों तथा वृक्ष आच्छादन प्रबन्धन योजना अध्ययन किए जा रहे हैं।

खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग, राष्ट्रसंत टुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर को शुष्कित *मधुका इंडिका* पुष्पों से तीन मूल्यवान खाद्य उत्पादों के विकास हेतु परामर्शी सेवाएं दी जा रही हैं।

व.व.अ.सं., जोरहाट

बी आर टी एफ–सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा व.व.अ.सं., जोरहाट को 'रणनीतिक सड़क फ्लैगहिल–डोकाला, पंगोलखा, वन्य जीव अभ्यारण सिक्किम राज्य' के जैव विविधता समाघात आकलन अध्ययन की परामर्शी योजना दी है।

शु.व.अ.सं., जोधपुर

- आई आई टी, राजस्थान की प्रस्तावित भूमि पर वनस्पतीकरण सर्वेक्षण और मृदा अभिलक्षणों पर ₹ 2.93 लाख (आई आई टी, राजस्थान, जोधपुर द्वारा प्रायोजित) की परामर्शी सेवाएं दी गई।
- पश्चिमी राजस्थान में ₹ 4.8 लाख से विशाल सुरक्षा पट्टिका विकसित करने पर परियोजना की तैयारी हेतु (राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा प्रायोजित) परामर्शी सेवाएं दी गई।
- राजस्थान में ₹ 8.1 लाख की (राजस्थान राज्य जैवईंधन प्राधिकरण द्वारा प्रायोजित) *जैट्रोफा करकस* जीनोटाईप उगाने के लिए तकनीकी परामर्शी सेवाएं दी गई।

हि.व.अ.सं., शिमला

फीना सिंह, मध्यम सिंचाई परियोजना, नूरपुर जिला, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के लिए आवाह क्षेत्र और उपचार योजना की तैयारी के लिए ₹ 15 लाख की परामर्शी योजना को अंतिम रूप दिया गया जिसे परामर्शी संगठन अर्थात अधिशासी अभियंता, आई पी एच, प्रभाग नूरपुर, जिला कांगड़ा (हि. प्र.) को दे दिया गया है।

व.उ.सं., रांची

- व.उ.सं., रांची और ओ एस एफ डी पी, भुवनेश्वर के साथ 15 नवम्बर 2011 को पासी वृक्ष संवर्धन अध्ययन (*एनोजीसस राक्सब*) (एक्स डी सी)' ग्वील एवं पेर्र, उड़ीसा' नामक परामर्शी परियोजना हेतु सहमति ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- राष्ट्रीय वर्षा पोषित क्षेत्र प्राधिकरण (एम.आर.ए.स.), भारत द्वारा निधि प्राप्त 'वनों के निकटवर्ती गांवों में वन भूमि के विस्तार की पहचान' नामक परियोजना को प्रारम्भ किया गया है।
- यूरोपीय संघ अंत: संसदीय प्रतिनिधि मंडल द्वारा 13 अप्रैल 2011 को ग्राम शीतल भुकुआर, लालगंज, वैशाली, जिला (बिहार) का दौरा किया गया तथा उन किसानों से बातचीत की गई जिन्होंने योजना आयोग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित 'समेकित बिहार में समुदाय आधारित वन प्रबंधन परियोजना' नामक परियोजना के अंतर्गत अपने खेतों में पापलर का रोपण किया था।

यूरोपीय संघ के अंत:संसदीय प्रतिनिधिमण्डल द्वारा वैशाली जिले में शीतल भुकआर, लालगंज गांव का दौरा

4.6. तकनीकी सेवाएं

व.अ.सं., देहरादून

- काष्ठ आधारित उद्योगों के लिए फंगल से अपक्षय हुए काष्ठ की पहचान।
- पादप स्वच्छता प्रमाण पत्र जारी करना।
- रोगों की पहचान।
- कवक की पहचान।
- फंगल कल्चर्स की आपूर्ति।
- भारतीय लुग्दी एवं कागज उद्योग और अनुसन्धान संगठनों को विभिन्न तकनीकी सेवाएं उपलब्ध कराई गई।
- रोजगार समाचार, नई दिल्ली, एन सी ई आर टी, नई दिल्ली, भारतीय रेलवे वाराणासी, आई एस आर ओ, अहमदाबाद, रेडेक्स स्टेशनरी, नई दिल्ली, रामा न्यूज प्रिंट, बिजनौर, श्री कृष्ण पेपर, नई दिल्ली, आर्मी नई दिल्ली, राज्य प्रिंटिंग से 105 नमूना कागज प्राप्त किये गये।
- रूड़की तथा शिक्षा निदेशालय, देहरादून के भौतिक तथा आप्टीकल गुणों का परीक्षण किया गया।
- काष्ठ प्रक्रमण प्रभाग द्वारा परीक्षण, प्रशिक्षण और शुष्कन उपचार करके ₹ 6.95 लाख का राजस्व प्राप्त किया गया।
- अकाष्ठ वन उपज, प्रभाग, व.अ.सं. की मांग पर वितरण के लिए औषधीय पादपों का उत्पादन किया गया।
- रेणुका बांध परियोजना, हि. प्र. का आधारिक और एस आई ए सर्वेक्षण पूरा किया गया और वन संवर्धन प्रभाग के परामर्शी कार्य को पूर्ण किया गया।
- भारतीय लुग्दी एवं कागज उद्योगों को विभिन्न तकनीकी सेवाएं उपलब्ध कराई गई।
- मैसर्स डाबर एडीटिब्स, ग्वालियर से मांड का नमूना प्राप्त हुआ जिसका विश्लेषण किया गया।
- मैसर्स अनिल प्रोडक्ट्स लिमिटेड, अहमदाबाद द्वारा दिए गए मांड के दस नमूनों का विश्लेषण किया गया और उनका रूपांतरण निश्चित किया गया।
- वर्ष के दौरान नमी मात्रा के लिए 39 ग्राहकों के 53 नमूनों का परीक्षण किया गया।
- वर्ष के दौरान छः ग्राहकों के लिए करीब 950 क्यूबिक फिट प्रकाष्ठ का संश्लेषण किया गया।
- वर्ष के दौरान 17 फर्मों से 62 काष्ठ नमूनों का यांत्रिक परीक्षण किया गया।
- वर्ष के दौरान कई फर्मों के लिए काष्ठ नमूनों का परिरक्षण बढ़ाया गया।
- वर्ष के दौरान कई फर्मों के लिए प्लाईवुड पर आसंजक परीक्षण किया गया।
- व.अ.सं. के विभिन्न प्रभागों के लिए मृदा नमूनों का विश्लेषण किया गया।

विभिन्न फर्मो/संगठनों को जिन्हें काष्ठ और काष्ठ उत्पाद परीक्षण की तकनीकी सेवाएं दी गई है इस प्रकार :

1. मैसर्स राष्ट्रीय केमीकल्स एण्ड फर्टीलाईजर्स लिमिटेड, थाल एकक, रायगढ़, महाराष्ट्र।
2. मैसर्स कॉमन वेल्थ गेम्स, प्रभाग वी सी पी डब्ल्यू डी, एम डी सी, राष्ट्रीय स्टेडियम, नई दिल्ली।
3. मैसर्स एच पी सी एल (ल्यूब रिनफाइनरी, मुम्बई)।
4. मैसर्स पॉलीप्लेक्स लिमिटेड, नोएडा।
5. मैसर्स सदर्न कूलिंग टावर प्राईवेट लिमिटेड, कलकत्ता।
6. मैसर्स पालटेक कूलिंग टावर्स एवं इक्वीपमेंट लिमिटेड, गुड़गांव।
7. मैसर्स हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, कारपोरेशन लिमिटेड, मुम्बई।
8. मैसर्स सब डिविजीनल इंजीनियर प्रोवल,सब डिव. नं. 1 पी डब्ल्यू डी वी एवं आर पानीपत।
9. मैसर्स स्टरलाईट इंडस्ट्रीज (I) लिमिटेड, ट्यूटीकोरिन
10. मैसर्स नार्थ स्ट्रीट कूलिंग टावर्स प्राईवेट लिमिटेड, गाजियाबाद।
11. मैसर्स सेंट्रल सब डिविजन – IV सी–85, एच आई जी कलोनी, भुवनेश्वर, उड़ीसा।
12. मैसर्स मेलफ्रेंक इंजीनियर्स, मुम्बई।
13. मैसर्स कूलाकों टावर्स प्राइवेट लिमिटेड, कलकत्ता।

- काष्ठ आधारित उद्योगों में के लिए काष्ठ पर कवक के अपक्षय की पहचान
- पादप स्वास्थ्य प्रमाण पत्र जारी करना।
- पिथौरागढ़ वन प्रभाग के जिला वन अधिकारी को पिथौरागढ़ में देवदार वृक्षों की मृत्यता की जानकारी दी गई।
- पंजाब वन विभाग के वन संरक्षक (अनुसन्धान) को होशियारपुर वन प्रभाग में शीशम की मृत्यता की जानकारी दी।

- हरियाणा वन विभाग क्रियाकलापों जैसे पौधशाला और रोपणियों के बारे में सलाहें दी।
- शिव शक्ति रोपण लिमिटेड बरेली को सहारनपुर में सागौन मृत्यता की जानकारी दी।
- गया हवाई अड्डे में श्रीलंका के बोध वृक्ष को संगरोध निकासी की अनुमति दी।
- वैशाली, बिहार में सूख रहे पॉपलर वृक्षों में रोग की जांच की।

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर द्वारा केरल वन विभाग को बीज उत्पादन के क्षेत्र की स्थापना में तकनीकी सलाह दी गई। टीम द्वारा सर्वेक्षण किये गये 3143 है. क्षेत्र में से दल ने सागौन बीज उत्पादन क्षेत्र के लिए 1492 है सागौन रोपण अभिज्ञात किया।

फिशर पादपालय में पादप पहचान सेवाएं दी गई

तमिलनाडु वन विभाग को पादप पहचान सेवाएं दी गई। व.आ.वृ.प्र.सं के विभिन्न अनुसन्धान प्रभाग, कॉलेज और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और किसानों को समय-समय पर पादप पहचान सेवाएं मुहैया कराई गई। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान करीब 600 विद्यार्थी, स्कालर्स और अनुसन्धानकर्ताओं ने अपने अध्ययन हेतु पादपालय का दौरा किया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

- विभिन्न संगठनों (सरकार/गैर-सरकारी/पी एस यू/प्राईवेट इत्यादि) को काष्ट पहचान, नमी मात्रा निर्धारण, घनत्व और सामर्थ्य गुणों के बारे में सेवाएं दी गई।
- वन विभाग के कर्मियों और गैर सरकारी संगठनों पौधशालाओं और रोपण तथा प्रकाष्ठ में कीटविज्ञान और रोगजनक समस्याओं का निवारण किया और रोकथाम के उपाय बताए गए।
- संस्थान के डब्ल्यू बी डी प्रभाग द्वारा पिडीलाईट उद्योग लिमिटेड मुम्बई से प्राप्त काष्ठ प्रशिक्षिकाओं के नमूनों का परीक्षण किया गया। एक वर्ष की परीक्षण रिपोर्ट को 24 अगस्त 2011 को भेज दिया गया है। एफ आर ओ, बंगलौर के अनुरोध पर नीम के वृक्ष में रोग की समस्या के नियंत्रक उपाय सुझाए गए। व्यावसयिक सर्वेक्षणों के समक्ष- 22 सितम्बर 2011 को कवक की उपस्थिति के बारे में काष्ठ परीक्षण किए गए। रबर बोर्ड, कोट्टायम, केरल को 16 फरवरी 2012 को कल्चर्स की आपूर्ति की गई।
- अन्त: उपभोक्ताओं से प्राप्त तेरह काष्ठ नमूनों को उनके परिरक्षण गुणों के लिए विश्लेषित किया गया और रिर्पोट भेजी गई।
- काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर में 4 जनवरी 2012 को डॉ. पी. जे. दिलीप कुमार, भा.व.से., महानिदेशक (वन), भारत सरकार द्वारा डॉ. वी. के. बहुगुणा, भा.व.से, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. की उपस्थिति में काष्ठ संग्रहालय/विवेचन केंद्र (डब्ल्यू.एम.आई.सी.) का उद्घाटन किया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

संस्थान द्वारा विभिन्न हितधारकों को तकनीकी सेवाएं मुहैया कराई जा रही हैं यथा : *राज्य वन विभाग, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के वन विकास निगम*। इन सेवाओं में आवश्यक तकनीकी सलाहकार सेवाएं शामिल हैं। इस अवधि में सामान्यत: साल छिद्रकों और साल मृत्यता के मॉनीटरिंग और प्रबंधन पर मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य वन विभागों को उनके अनुरोध पर समय-समय पर सेवाएं दी गई।

व.व.अ.सं., जोरहाट

एक सौ चौंत्तीस आई एन एफ, बी टी एन, ई सी ओ (टी ए), असम के मृदा नमूनों के विश्लेषण द्वारा राजस्व प्राप्त किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर

- राजस्थान राज्य में जैट्रोफा के आशावान जेनोटाईप का प्रदर्शन किया गया और किसानों, हितधारकों और राज्य जैव ईंधन, प्राधिकरण राजस्थान को प्रशिक्षण दिया गया।
- वन विज्ञान केन्द्र तथा किसान मेला में सामग्री प्रदर्शित की गई तथा वन मृदों, जैवनिकासी वर्षा जल संचयन पर अनुसन्धान खोजों की प्रदर्शनी लगाई गई ताकि निम्नीकृत अरावली पहाड़ियों की उत्पादकता को बढ़ाया जा सके।
- विभिन्न संस्थानों में आयोजित व्याख्यानों द्वारा किसानों के समक्ष अनुसन्धान निष्कर्षों को प्रसारित किया गया।
- आवश्यकतानुसार, राज्य वन विभाग, राजस्थान, गुजरात, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली, किसानों और गैर सरकारी संगठनों को वानिकी तथा संबद्ध पहलुओं पर तकनीकी सेवाएं दी गई जिनमें रेगिस्तान का मुकाबला करने,

निम्नीकृत भूमियों के पुनर्स्थापन, वन संवर्धन, आधुनिक पौधशाला, वन रक्षण तथा वृक्ष सुधार पर विशेष ध्यान दिया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला

श्री अनिल कुमार शर्मा, प्रभाग वन अधिकारी, कूल्लू के अनुरोध पर डॉ. सुमित चक्रवर्ती, वैज्ञानिक-'ई' को संस्थान के निदेशक द्वारा मौहल (कुल्लू वन प्रभाग) में देवदार की वन पौधशालाओं में सफेद गरब के हमले का अध्ययन करने हेतु प्रतिनियुक्त किया गया। पुन: रोपण के लिए सभी संवर्धन तकनीकों को उपलब्ध करवाने के साथ-साथ प्रभावित पौधों को पुन: स्थापित करने हेतु रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

4.7. राजभाषा गतिविधियाँ

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भा.वा.अ.शि.प. और उसके संस्थानों द्वारा दैनिक कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन के दिशानिर्देशों के अनुसार काम हो रहा है। मुख्यालय द्वारा कार्यशालाओं और प्रशिक्षणों का निरंतर आयोजन किया जाता है। भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सारांश' पर 24 अगस्त 2011 को प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें 70 से अधिक भा.वा.अ.शि.प. कर्मियों ने भाग लिया। 14 से 20 सितम्बर 2011 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं यथा : निबंध लेखन, नोटिंग तथा स्वरचित काव्य पाठ का आयोजन किया गया। समारोह के अंत में डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा पुरस्कार और प्रमाण पत्र दिए गए। संस्थानों तथा मुख्यालय में नियमित अंतराल पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

भा.वा.अ.शि.प. में हिन्दी सप्ताह

भी किया गया। तिमाही प्रगति रिपोर्ट संकलित की जाती है जिसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के राजभाषा विभाग को भेजा जाता है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए गृह पत्रिका तरूचिंतन तथा छमाही न्यूजलैटर 'वानिकी समाचार' का हिन्दी में प्रकाशन किया जा रहा है।

व.अ.सं., देहरादून

- विहित फार्मेट में हिन्दी कार्य की रिपोर्ट भेजी गई।
- वन रोगविज्ञान प्रभाग के वैज्ञानिकों और स्टाफ ने 3 अक्टूबर 2010 को हिन्दी गोष्ठी में भाग लिया। चौदाह सितम्बर 2011 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सी एस एफ ई आर के कार्मिकों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. वी पी पाण्डे, अनुसन्धान सहायक और डॉ. अनुभा श्रीवास्तव अनुसन्धान अधिकारी को क्रमश: प्रथम और द्वितीय पुरस्कार दिया गया।
- कार्यक्रम के अनुसार सी एस एफ ई आर के कार्मिक प्रतिनिधियों द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में भाग लिया गया।
- कार्यालय में हिन्दी में कार्यसुधार हेतु तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया।
- विभिन्न लक्षित वर्गों के लिए वैज्ञानिक प्रशिक्षण/साहित्य (पैम्फलेट, ब्रोशर्स, हैन्डआउट्स आदि) का विकास भी किया गया।
- प्रभाग के कार्मिकों द्वारा हिन्दी दिवस, राजभाषा प्रगति की बैठक 22 मार्च 2012 तथा हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सारांश' प्रशिक्षण 25 अगस्त 2011 में लिया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर

1. हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सारांश' टंकण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।
2. हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया और इस संदर्भ ने सभी कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
3. द्विभाषी नाम पट्टे तैयार किए गए।
4. निदेशक, जी सी आर, एच. ओ, स्टेनोग्राफरों के लिए द्विभाषी रबर की मोहरें बनाई गई।

5. हिन्दी समाचार पत्र 'राजस्थान पत्रिका' खरीदकर पुस्तकालय में रखी गई।
6. सभी कर्मचारियों को हिन्दी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ वर्गों हेतु नामित किया गया।
7. व.आ.वृ.प्र.सं., हिन्दी विवरणिका तैयार की गई।
8. प्रतिदिन हिन्दी के एक शब्द से कर्मचारियों का परिचय।
9. सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठके आयोजित की गई।
10. प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर में 4 नवम्बर 2011 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हिन्दी अनुवाद, हिन्दी निबंध, हिन्दी टंकण आदि की प्रतियोगिताएं रखी गई और विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर द्वारा सितम्बर 2011 में हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। संविदा कर्मियों के लिए लिखित और मौखिक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा श्री रूपक कुमार दत्ता, आई पी एस, पुलिस, मुख्यालय बंगलौर द्वारा इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पुरस्कार वितरित किए गए। तदनुसार, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें आयोजित की गई। लिपिक वर्गीय कर्मचारियों को हिन्दी टंकण और स्टेनोग्राफी प्रशिक्षण दिए गए। यह संस्थान, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बंगलौर का सदस्य कार्यालय है तथा संस्थान

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में हिन्दी दिवस का आयोजन

ने समय-समय पर बैठकों में भाग लिया। वरिष्ठ अधिकारियों के लिए कार्यशालएं आयोजित की गई।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा 5 सितम्बर 2011 से 19 सितम्बर 2011 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी प्रश्न मंच, प्रशासनिक हिन्दी भाषा ज्ञान, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली, हिन्दी टंकण, हिन्दी वाद-विवाद, हिन्दी निबंध आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी में सरकारी काम करने पर दस कार्मिकों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय और पांच सांत्वना पुरस्कार दिए गए। 'शोध पत्रों में हिन्दी तकनीकी शब्दावली की आने वाली कठिनाईयां एवं उनका समाधान' पर 15 मार्च 2012 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। तकनीकी कार्य से संबंधित कार्मियों के प्रश्नों के उत्तर वक्ता महोदय द्वारा दिए गए।

व.व.अ.सं., जोरहाट

दिनांक 15 और 16 जून 2011 को संस्थान में हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सारांश' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। पहले दिन अधिकारियों और वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण दिया गया और दूसरे दिन सभी कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। यह सॉफ्टवेयर यूनीकोड आधारित है और इसमें फॉल्ट की समस्या नहीं है। संस्थान द्वारा 12 सितम्बर 2011 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. विजय कुमार, एच ओ डी, हिन्दी प्रभाग, जगनाथ बरूआ महाविद्यालय को अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यशाला में वैज्ञानिक, अधिकारी तथा अनुसन्धान कार्मिक भी उपस्थित थे। बाईस दिसम्बर 2011 को संस्थान में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। तथा 22 मार्च 2012 को हिन्दी साफ्टवेयर 'सारांश' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सारांश' के बारे में बताया गया। कार्यशाला की मेजबानी श्री शंकर शर्मा, हिन्दी अनुवादक द्वारा की गई। इस कार्यशाला में अधिकारियों/कर्मचारियों को सॉफ्टवेयर की संस्थापन का प्रशिक्षण दिया गया। एन ई आई एस टी, जोरहाट में 7 मार्च 2011 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 22वीं बैठक का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण, ब्यूरो भारतीय जीवन बीमा निगम, भारतीय ओवरसीज बैंक, केंद्रीय बैंक, विजया बैंक, इंडियन बैंक, यूको बैंक, राष्ट्रीय बीमा,

पंजाब एण्ड सिंध बैंक और रबर बोर्ड के अधिकारी/प्रतिनिधि, इस बैठक में शामिल थे। संस्थान में हिन्दी दिवस तथा हिन्दी सप्ताह भी मनाया गया। हिन्दी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं, जैसे श्रुतलेख, निबंध लेखन, सामान्य ज्ञान, नारे आदि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एन के वासु, निदेशक, व.व.अ.सं., जोरहाट, सुश्री इमितुला आव, समूह समन्वयक, सभी वैज्ञानिक, स्टाफ और अनुसन्धान कार्मिक उपस्थित थे।

शु.व.अ.सं., जोधपुर

2011–12 वर्ष के दौरान हिन्दी पत्रव्यवहार 75.22 प्रतिशत था और फाईलों में हिन्दी में नोटिंग 84.09 प्रतिशत था। कुल चार कार्यशालाएं आयोजित की गई। संस्थान प्रमुख द्वारा नराकास की सभी बैठकों में भाग लिया गया। संस्थान की वेबसाइट को आंशिक रूप से द्विभाषी बनाया गया। 14 से 28 सितम्बर 2011 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवधि दौरान हिन्दी प्रगति के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

हिन्दी में अधिक काम करने वाले कार्मिकों को राजभाषा पुरस्कार दिए गए। पुस्तकालय के लिए ₹ 8774.00 मूल्य की पुस्तकें खरीदी गई। संस्थान के स्टाफ ने कार्यशाला/संगोष्ठी में भाग लिया।

हि.व.अ.सं., शिमला

हिन्दी दिवस के महत्व को देखते हुए, हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला ने सरकारी काम काज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए 14 सितम्बर 2011 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया जिसमें सभी वैज्ञानिक, अधिकारी और कर्मचारी मौजूद थे। संस्थान में 12 से 25 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। 25 सितम्बर 2011 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। समारोह में संस्थान के सभी कर्मचारी उपस्थित थे। तीन विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

व.उ.सं., रांची

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सी.आई.पी., कांके, रांची में 29 अगस्त 2011 को आयोजित बैठक में संस्थान के श्री विनय कुमार मिश्रा, उप वन संरक्षक और श्री आशुतोश कुमार पाण्डेय, उच्च श्रेणी लिपिक ने भाग लिया।
- संस्थान द्वारा 1 से 14 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। 15 सितम्बर 2011 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन भी किया गया जिसमें दैनिक सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने पर जोर दिया गया।
- श्री रामेश्वर दास, निदेशक तथा श्री ए. के. पाण्डेय, उच्च श्रेणी लिपिक ने 13 दिसम्बर 2011 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लिया। बैठक का आयोजन केंद्रीय कार्यालय सी आई पी, कांके, रांची में किया गया था।
- श्री आशुतोश कुमार पाण्डेय, उच्च श्रेणी लिपिक ने 20 दिसम्बर 2011 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक केन्द्रीय कार्यालय, रांची, सी आई पी, कांके में भाग लिया।
- निदेशक, राजभाषा और उनके वरिष्ठ निजी सहायक ने 22 और 23 दिसम्बर 2011 को आई एफ पी, रांची का दौरा किया और सरकारी कामकाज में हिन्दी के कार्यान्वयन का निरीक्षण किया।

4.8. पुरस्कार एवं सम्मान

व.अ.सं., देहरादून

- पोस्टर प्रस्तुतिकरण प्रतियोगिता में नीता गेरा तथा अविनाश कुमार शर्मा को अनुसन्धान शोध पत्र 'सुरक्षित फसल सीमाओं और पुनरुत्पादन दर पर *एन्ड्रोग्रोफिस पेनीक्यूलाटा, इवोल्वस अल्सीनोइड्स, फाइलेन्थिस यूरीनेरिया* तथा *रावोल्फिया सर्पेन्टीना* की साल वन, दून घाटी, उत्तराखण्ड में माडलिंग' पर तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- पर्यावरणीय संरक्षण, सतत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और रणनीतियां उत्तराखण्ड के संदर्भ में क्षेत्रीय विकास पर आयोजित सम्मेलन में 1 फरवरी 2011 को देहरादून में बी कुमार, एस नागर तथा वाई सी त्रिपाठी को '*टाईनोस्पोरा साइनेसस* के अभिलक्षणों में हरित पद्धति' पर सर्वोत्तम प्रस्तुति हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 'जड़ीय औषधियों की गुणवत्ता, सुरक्षा और क्षमता – पादप रसायन पद्धति' पर वाई सी त्रिपाठी और शिप्रा नागर को पादप रसायन तथा आयुर्वेद : क्षमता और सुअवसर, पर 10वीं संगोष्ठी में सर्वोत्तम मौखिक प्रस्तुति देने पर प्रथम पुरस्कार दिया गया। जिसका आयोजन मैनेजमेंट आफ यूनीवर्सिटी

जरनल आफ फायटोकैमिस्ट्री एण्ड आयुर्वेदिक हाइट द्वारा 24 दिसम्बर 2011 को देहरादून में आयोजित किया गया।

- 'आधुनिक मधुमेहरोधी दवाएं की खोज : आयुर्वेद द्वारा मार्गदर्शन' नामक शोध पत्र की सर्वोत्तम प्रस्तुति देने पर श्री एस. नागर, एन रेड्डू, वाई सी त्रिपाठी तथा एल उपाध्याय को 'पादप रसायन और आयुर्वेद : क्षमता और अवसर' की 10वीं संगोष्ठी में 24 दिसम्बर 2011 को देहरादून में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- '*टाईनोस्पोरा साइनेन्सिस* पॉलीसेकेराईड्स के संरचनात्मक विश्लेषण 'पर वी. कुमार, वाई सी त्रिपाठी और शिप्रा नागर तथा *केसुआ ग्लाउका* पर्ण सत्व का चूहों पर जेन्टामाईसीन सल्फेट युक्त नेफ्रोटॉक्सिट का प्रभाव, द्वारा एम रेड्डू, एम. सिंह, वी. के. वार्सने तथा वाई सी त्रिपाठी को एच एन बी, गढ़वाल विश्वविद्यालय, द्वारा आयोजित श्रीनगर में 11 से 13 मार्च 2012 को देहरादून में हरित रसायन पर आयोजित इन्डो-यू एस कार्यशाला - '*पर्यावरण एवं सतत विकास*'पर सर्वोत्तम प्रस्तुति पुरस्कार दिया गया।
- शिप्रा नागर तथा प्रवीण ओनियल, आर. ए.-I को '*टाईनोस्पोरा साइनेन्सिस* पॉलीसेकेराईड्स के संरचनात्मक अध्ययन' तथा *टेगेट्स माइन्यूटा* और *टर्मीनेलिया चीबुला* के प्राकृतिक रंगसाजी स्रोत के रूप में उपयोजन' पर क्रमश: छठी यूकोस्ट कांग्रेस 2011 में 14 से 16 नवम्बर 2011 को अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) में सर्वोत्तम मौखिक प्रस्तुति देने पर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया।
- रश्मि और सपना को 'चयूरा की मूल्यवृद्धि : वृक्ष से प्राप्त शानदार तेल बीज' पर शोध पत्र प्रस्तुत करने पर द्वितीय पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार 16 और 17 दिसम्बर को राष्ट्रीय रसायनशास्त्र में हुए विकास तथा रासायनिक शिक्षा' पर सम्मेलन में दिए गए।
- प्रवीन ओनियल तथा राकेश कुमार द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र 'सतत आजीविका के लिए *टर्मीनेलिया चीबुला* के फल का मूल्य वर्धन' के सर्वोत्तम पोस्टर प्रस्तुतिकरण पर प्रथम पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार भोपाल में 17 से 19 दिसम्बर 2011 को आयोजित सतत आजीविका के लिए अकाष्ठीय वन उत्पाद पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिए गए।
- सकलानी, आर., थपलियाल एम. तथा वीराबाबू, ओ. 2011 को '*बक्सस वैलीचियाना* के बीज अंकुरण पर तापमान तथा पूर्व उपचारों का प्रभाव-काष्ठ शिल्प उद्योग के लिए एक वैकल्पिक प्रजाति' पर छठी उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस, कुमाऊं विश्वविद्यालय, एस एस जे कैम्पस, अल्मोड़ा में 14 से 16 नवम्बर 2011 को पर्यावरण एवं विज्ञान के विषय में सर्वोत्तम मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार दिया गया।
- डॉ. वीना चंद्रा, वैज्ञानिक - एफ को 22 से 25 नवम्बर 2011 तक दिल्ली में आयोजित प्रथम भारतीय वन कांग्रेस में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने 'परम्परागत स्वास्थय रक्षण पद्धति में वनीय औषधीय पादप- देहरादून उत्तराखण्ड के जौनसार-बाबर क्षेत्र का आकलन' पर सर्वोत्तम पोस्टर प्रस्तुति दी। उन्हें प्रोफेसर एच एस श्रीवास्तव, विज्ञान एवं समाज फाउन्डेशन, लखनऊ (उ. प्र.) द्वारा भी सम्मानित किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर

- डॉ. कान्नन सी. एस. वेरियर को वर्ष 2010 के लिए जैवविविधता संरक्षण पर सर्वोत्तम अनुसन्धान कार्य के लिए भारतीय एंगियोर्स्पम टैक्सानामी संघ द्वारा आयोजित *रौला एस राव* पुरस्कार दिया गया।
- डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, वैज्ञानिक-ई को वृक्ष जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उच्च अनुसन्धान प्रशिक्षण लेने पर वर्ष 2010-11 का डी.बी.टी.-सी.आर.ई.एस.टी. (कटिंग एज् अनुसन्धान प्रगति एवं वैज्ञानिक प्रशिक्षण पुरस्कार) दिया गया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

- डॉ. ओ. के. रीमादेवी को भारतीय काष्ठ विज्ञान अकादमी के लिए अध्यक्ष चुना गया तथा डॉ. आर. सुंदरराज को अकादमी का कोषाध्यक्ष चुना गया।
- डॉ. आर. सुंदरराज, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (भारत) के सदस्य बने।
- डॉ. वी. पी. तिवारी, वैज्ञानिक- 'एफ' को आई यू एफ आर ओ एक्जीक्यूटिव बोर्ड द्वारा आई यू एफ आर ओ डिव. 4, यूनिट 4 जनवरी 2013 (वन मापिकी में उपकरण और पद्धतियां) का उप-समन्वयक नियुक्त किया गया है।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

- डॉ. एस ए. अंसारी को वर्ष 2011–12 के लिए फाउंडेशन फॉर साइंटीफिक फॉरेस्ट्री, भारत वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा वरिष्ठ वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया।
- केंद्र के एन डी खेबरागडे, वैज्ञानिक –'बी' को *'एस्परागस रेसीमोसस'* के प्रकंद उत्पादन पर जैविक उर्वरकों का प्रभाव– एक महत्वपूर्ण औषधीय पादप' नामक अनुसन्धान प्रलेख की सर्वोत्तम प्रस्तुति पर 21 और 22 जनवरी 2012 को सतत विकास एवं पर्यावरणीय रक्षण के लिए जैवप्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर राष्ट्रीय सेमीनार में पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसे यू जी सी (सी आर ओ) भोपाल द्वारा प्रायोजित तथा सरकारी कॉलेज, अरोन जिला गुना (मध्य प्रदेश) के जंतुविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित किया गया था।

तामिया और पटलकोट में वैयक्तिक नवीन कार्य के क्षेत्र में डॉ. सुनीश बख्शी, भा.व.से. निदेशक, वा.अ.म.स.वि., के छिंदवाड़ा को महामहिम श्री राम प्रसाद यादव द्वारा भोपाल मध्य प्रदेश में पारि–पर्यटन पुरस्कार, प्रमाण पत्र और रु. 25000/– की नकद राशि दी गई।

शु.व.अ.सं., जोधपुर

डॉ. तरूणकांत को वन आनुवंशिकी संसाधनों के आकलन और संरक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में 19 और 20 दिसम्बर 2011 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची में वैज्ञानिक बानिकी फाउंडेशन द्वारा युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2012 प्रदान किया गया।

व.उ.सं., रांची

श्री आर. दास को समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में उनके योगदान के लिए समकालिक जीवविज्ञानीय वैश्विक कन्सोर्टियम (2010) द्वारा जीवनकालिक उपलब्धि पुरस्कार दिया गया।

4.9 विशेष क्रियाकलाप (जैसे वन महोत्सव, वानिकी दिवस और अन्य अवसर)

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

व.अ.सं., देहरादून द्वारा 11 मई 2011 को शताब्दी वन विज्ञान केंद्र (रेंजर्स कॉलेज), देहरादून में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। संस्थान के सभी संग्रहालय इस दिन नि:शुल्क प्रवेश हेतु खुले थे।

विश्व पर्यावरण दिवस

व.अ.सं., देहरादून द्वारा 5 जून 2011 को विश्व पर्यावरण दिवस तथा व.अ.सं. स्थापना दिवस मनाया गया। स्वच्छता अभियान के दौरान संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा परिसर में फैले हुए प्लास्टिक और अन्य कचरे को साफ किया गया जिससे व.अ.सं. परिसर में रहने वाले लोगों में प्लास्टिक और कूड़े को साफ करने हेतु प्रेरणा मिली। संस्थान के सूचना केंद्र के आगे विशेष प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ. वी. के. बहुगुणा, भा.व.से. महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किया गया। उनके साथ डॉ. एस. एस. नेगी, निदेशक, व.अ.सं., देहरादून के अधिकारी/कर्मचारी भी थे। शाम के समय 'टेरिटोरियल आर्मी सिम्फोनी आर्केस्ट्रा' का कार्यक्रम था। व.अ.सं. द्वारा सम्पादित व.अ.सं. का गीत बजाया गया जिसे लोगों द्वारा सराहा गया। इस दिन सभी संग्रहालयों में निशुल्क प्रवेश दिया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 5 और 6 जून 2011 को चेनमगुड़ी मिडल इंगलिश स्कूल, चेनमगुड़ी – सोताई, जोरहाट (असम) में विभिन्न आयोजनों के साथ विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा 5 जून 2011 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न शुष्क और समशुष्क वृक्ष प्रजातियों के 50 पौधों को शु.व.अ.सं. की वृक्ष वाटिका में रोपित किया गया और खेजरी की मृत्यता तथा इसके प्रबंधन की समस्या पर एक पैम्पलेट का विमोचन किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा 5 जून 2011 को 'विश्व पर्यावरण दिवस' का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न स्कूलों के स्कूली

व.व.अ.सं. द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

बच्चों सहित उनके अध्यापकों और करीब 110 लोगों ने भाग लिया। स्कूली बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए संस्थान द्वारा क्विज प्रतियोगिताएं, डिक्लेमेशन कांटेस्ट, नारे लिखने और ड्राईंग – पेंटिंग की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई।

विश्व वानिकी दिवस

व.अ.सं., देहरादून द्वारा विश्व वानिकी दिवस मनाया गया। व.अ.सं. सूचना केंद्र में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान की उपलिब्धयों को बताते हुए पोस्टर, मॉडल चित्रण शामिल थी। प्रदर्शनी में कई कॉलेजों और स्कूलों के विद्यार्थी, किसान और अन्य लोग शामिल थे। व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 21 मार्च 2012 को अपने आसपास के ग्रामीणों और जनता में जागरूकता फैलाने के लिए विश्व वानिकी दिवस का आयोजन किया गया।

वन्य जीव सप्ताह

व.अ.सं., देहरादून द्वारा 1 से 5 अक्टूबर 2011 तक '**वन्य जीव सप्ताह**' मनाया गया। इस अवसर पर व.अ.सं. विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्‌घाटन डॉ. एस. एस. नेगी, निदेशक, व.अ.सं. देहरादून द्वारा किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

व.अ.सं., देहरादून द्वारा 31 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2011 तक '**सतर्कता जागरूकता सप्ताह**' मनाया गया। डॉ. वी.आर.आर. सिंह, प्रमुख वन संवर्धन प्रभाग, व.अ.सं. द्वारा संस्थान के सभी कर्मचारियों से शपथ ली गई। इस अवसर पर 'क्या लोकपाल बिल भ्रष्टाचार मिटाने का सही विकल्प है?' विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। व.अ.सं. के प्रमण्डल कक्ष में एक कार्यशाला का गठन किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर द्वारा 4 नवम्बर 2011 को ***'सतर्कता जागरूकता सप्ताह'*** 2011 मनाया गया। सतर्कता, सूचना का अधिकार आदि विषयों पर विचार–विमर्श किया गया। तमिल तथा अंग्रेजी में निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर द्वारा 31 अक्टूबर 2011 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया।

हिमालयन दिवस

व.अ.सं., देहरादून द्वारा 9 सितम्बर 2011 को हिमालयन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अतिथि संकाय डॉ. राकेश शाह, मुख्य वन संरक्षक (वन्य जीव), उत्तराखण्ड, डॉ. सुभाष नौटियाल, प्रमुख, वनस्पति प्रभाग, डॉ. राकेश कुमार हैस्को (हिमालयन पर्यावरण अध्ययन एवं संरक्षण संगठन) और डॉ. लक्ष्मी रावत, प्रमुख, पारिस्थितिकी प्रभाग ने सारगर्भित व्याख्यान दिए। इस अवसर पर व.अ.सं. के कार्यकारी निदेशक डॉ. वी. आर. आर. सिंह तथा अन्य अधिकारी और वैज्ञानिक उपस्थित थे। श्रीमती जयश्री आरडे, प्रमुख, विस्तार प्रभाग ने सभी अतिथियों तथा संकाय सदस्यों का स्वागत किया तथा श्री आर. बी. सिंह, वैज्ञानिक – बी, विस्तार प्रभाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मनाया गया जिसके तहत 22 मई 2011 को स्कूल/कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। महिलाओं और पुरुषों के लिए लघु मैराथन का आयोजन किया

डॉ. सी. शैलेंद्रबाबू, भा.पु.से., पुलिस कमिश्नर, कोयम्बटूर द्वारा मिनी मैराथन का उद्‌घाटन किया गया

श्री जे.सी. काला, भा.व.से. पूर्व डी जी एफ एवं एस. एस. पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

गया। अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता समारोह के साथ-साथ मस्त्य संग्रहालय की सेंटनरी भी मनाई गई और स्मारिका का विमोचन किया गया। मस्त्य संग्रहालय की स्थापना 1911 में की गई थी जिसमें सी ई सी मत्साल्य, पी एफ फायसन आदि द्वारा संग्रह किया गया था। संग्रहालय में करीब 3312 प्रजातियां मौजूद हैं।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर द्वारा 20 मई 2011 को अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मनाया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा स्थानीय लोगों को जैवविविधता के प्रति जागरूक करने के लिए 23 मई 2011 को जमतार गांव में विश्व जैवविविधता दिवस मनाया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट में 22 और 23 मई 2011 को चंद्रकमल बेजवरूआ हाई स्कूल, बोलोमा, जोरहाट (असम) में अंतर्राष्ट्रीय जीवविज्ञानीय जैवविविधता दिवस मनाया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर में 22 मई को अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर शु.व.अ.सं. की वृक्ष वाटिका में शुष्क तथा समशुष्क वृक्ष प्रजातियों के 50 पौधों को रोपित किया गया यथा : *केपेरिस डेसीडुआ, मैंगीफेरा इंडिका, सराका इंडिका, पाइथीसेलोवियम ड्यूलाग, एनोना स्क्वामोसा, प्रूनस ड्यूल्सिस, एनोना रेटीक्यूलाटा* । इस अवसर पर शु.व.अ.सं. की हिन्दी पत्रिका 'आफरी दर्पण' का विमोचन किया गया जिसमें (वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन प्रभाग) का विशेषांक था।

वन महोत्सव

- उ.व.अ.सं., जबलपुर द्वारा सी आई आई, स्किल्स ट्रेनिंग पार्क इमलीखेड़ा, छिंदवाड़ा में 23 और 24 जुलाई 2011 को वन महोत्सव मनाया गया। व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 7 जुलाई

श्री पी जे परमार एवं डॉ. टी एस राठौर द्वारा शु.व.अ.सं. की वनस्पति वाटिका में औपचारिक पौध रोपण

2011 को 62वां वन महोत्सव मनाया गया। व.उ.सं., रांची द्वारा वन महोत्सव पर 13 जून 2011 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा 28 जुलाई 2011 को वन महोत्सव मनाया गया जिसमें सालावास ग्राम पंचायत तथा एस एफ डी जोधपुर शामिल थे। पूरे कार्यक्रम को प्रदर्शन ग्राम स्थल, सालावास में लोगों को प्रदर्शन ग्राम और शु.व.अ.स. द्वारा सालावास पंचायत में शु.व.अ.स. के क्रियाकलापों के प्रति जागरूक किया गया। मुख्य अतिथि श्री मलखान सिंह विश्नोई, एम एल ए लूनी, श्री उमराम पटेल सरपंच सालावास, श्री हजारी सिंह, सामाजिक कार्यकर्ता और ए एफ आर आई के कर्मियों ने प्रदर्शन ग्राम में विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के पौधों का औपचारिक रोपण किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा निदेशक, शु.व.अ.स. द्वारा वन महोत्सव और शु.व.अ.स. की सूचना पुस्तिका (हिन्दी) में प्रकाशित की

गई। इस अवसर पर प्रदर्शन ग्राम में रोपण के लिए किसानों में खेजरी, रोहिड़ा, सिस्सू और करंगी के 150 स्तरीय पौधों का वितरण किया गया।

रेगिस्तानीकरण का मुकाबला करने के लिए विश्व दिवस

शु.व.अ.सं., जोधपुर द्वारा रेगिस्तानीकरण का मुकाबला करने के लिए विश्व दिवस 17 जून 2011 को समारोह आयोजित किया गया। विषय था : 'वनों द्वारा शुष्क भूमियों को हरा-भरा रखा जाता है।' इस अवसर पर शु.व.अ.स., जोधपुर द्वारा संक्षिप्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यू बी आई, बैंक, बस्नी ब्रांच, सरस्वती नगर, जोधपुर में विभिन्न शुष्क और समशुष्क 50 से अधिक वृक्ष प्रजातियों का औपचारिक रोपण किया गया। 'रेगिस्तानीकरण का मुकाबला करने के लिए विश्व दिवस' पर एक पैम्पलेट प्रकाशित किया गया जिसे हितधारकों में वितरित किया गया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर द्वारा 30 नवम्बर 2011 को कन्नड़ राज्य उत्सव दिवस मनाया गया।

भारतीय वन कांग्रेस

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा 22 से 25 नवम्बर 2011 तक पहली भारतीय वन कांग्रेस (आई.एफ. सी.) का आयोजन किया गया। आई एफ सी का उद्घाटन सुश्री जयंती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, नई दिल्ली द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने देश के वनों से सम्बंधित समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण करने पर जोर दिया। उन्होंने जलवायु परिवर्तन तथा वनों पर बढ़ रहे दबाव की ओर ध्यान देने पर जोर दिया। उन्होंने राज्य स्तर पर वन जैवमात्रा, वृद्धि, अकाष्ठीय वन उत्पाद, पारिपर्यटन आदि पर राज्य स्तर पर विश्वसनीय डाटा एकत्र करने को कहा। उन्होंने विशेषज्ञों से मानव वन्यजीव टकराव को रोकने के लिए नव प्रवर्तन समाधान, देश में वन प्रमाणन विकसित करने और वनों से होने वाले प्रत्यक्ष और परोक्ष लाभों का आकलन करने को कहा।

'रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए विश्व दिवस' के अवसर पर औपचारिक रोपण

माननीय मंत्री जी का स्वागत करते हुए महानिदेशक भा.वा.अ.शि.प.

सुश्री जयंती नटराजन, माननीय मंत्री, पर्यावरण एवं वन, आई एफ सी 2011 के उद्घाटन सत्र में व्याख्यान देते हुए

डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन, राज्य सभा सदस्य ने भा.वा.अ.शि.प. द्वारा प्रथम वन कांग्रेस शुरू करने की पहल का स्वागत किया। उन्होने भा.वा.अ.शि.प. को तटीय कछारी वनों, पर्वतीय क्षेत्रों और शुष्क भागों पर अनुसन्धान को केंद्रित करने को कहा। उन्होंने कहा कि देश में कृषि वानिकी की प्रगति के लिए कई वन विज्ञान केंद्र खोलने होंगे। उन्होंने भा.वा.अ.शि.प. को खनन पुनर्स्थापन हेतु तकनीकें विकसित करने को कहा क्योंकि इस क्षेत्र में तुरंत कार्य करने की आवश्यकता है।

डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन, राज्य सभा सदस्य

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने अपने संबोधन में जोर देकर कहा कि वानिकी क्षेत्र में व्यापक निवेश केवल वन प्रबंधन के लिए ही नहीं बल्कि देश में खाद्य और जल सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए भी आवश्यक है।

सुश्री कैटीलिन वीसन, कंट्री डायरेक्टर, यू एन डी पी – भारत ने कहा कि यू एन डी पी द्वारा जैवविविधता संरक्षण और वन आधारित आजीविका को मुख्य धारा में लाने के प्रयासों में सहायता कर रहा है। उन्होंने कांग्रेस के लिए चयनित विषय क्षेत्र की सराहना की और भा.वा.अ.शि.प. को यू एन डी पी की सहायता का आश्वासन दिया।

सुश्री कैटलिन वीसन, यू एन डी पी की कंट्री डायरेक्टर

कांग्रेस के दौरान माननीय मंत्री जी ने वानिकी पर किताबों की गैलेक्सी का विमोचन किया जिनमें 'Forestry in the Service of Nation: ICFRE Technologies' भी शामिल थी जिसमें देश में वानिकी अनुसन्धान के सौ वर्षों से अधिक समय का वर्णन था और 'Voices from the Field' तथा 'Status of JFM in India' पर पुस्तकें भी शामिल थी। इन सभी पुस्तकों का प्रकाशन भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किया गया। इन पुस्तकों में वानिकी के क्षेत्र में नवीन शुरूआतों की झलकियाँ हैं और वानिकी द्वारा जनकल्याण में योगदान का वर्णन है। इस अवसर पर पचास से अधिक संगठनों के 550 से अधिक भागीदार उपस्थित थे। इसके पश्चात अलग-अलग सत्रों में चार मुख्य विषयों के 28 उप विषय और सर्वोत्तम प्रस्तुतिकरणों को पुरस्कृत किया गया। नई दिल्ली के वन चार्टर 2011 को अंगीकृत करने के साथ ही समापन किया गया।

प्रथम भारतीय वन कांग्रेस 2011 के भागीदार

वृक्ष उत्पादकों का चतुर्थ मेला 2012

व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर द्वारा चतुर्थ वृक्ष उत्पादकों का मेला 23 और 24 फरवरी 2012 को आयोजित किया गया। मेले का उद्घाटन 23 फरवरी 2012 को श्रीमती जयंती नटराजन, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया। मेले में तमिलनाडु, पांडुचेरी और

आई एफ जी टी बी, कोयम्बटूर द्वारा आयोजित वृक्ष उत्पादकों का मेला 2012

पालकड्ड जिले के 1000 से अधिक किसानों ने भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता डॉ. वी. के. बहुगुणा, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा की गई। माननीय मंत्री ने कृषि वानिकी और फार्म वानिकी प्रौद्योगिकियों पर प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया जिसमें 30 से अधिक वानिकी अनुसन्धान संगठन, काष्ठ आधारित उद्योग, जैवखाद और जैव उर्वरक उद्योग, फार्म उपकरण और साज–सामान, जैविक उत्पाद, सिंचाई निकाय, हाईटेक नर्सरी में रोपण स्टाक उत्पादन, स्वावलंबी वर्ग आदि ने भाग लिया। जीविकोपार्जन में वृद्धि के लिए सुधारित वृक्ष कृषि पर कार्यशाला का उद्घाटन किया गया।

बांस और बेंत उन्नत अनुसन्धान केंद्र

श्री पु लाल थानहवाल, माननीय मुख्यमंत्री मिजोरम द्वारा 16 मार्च 2012 को एक शानदार समारोह में बेथलेहम वेन्थलांग, आईजॉल, मिजोरम में बांस और बेंत उन्नत अनुसन्धान केंद्र के नए भवन परिसर का उद्घाटन किया गया। समारोह में श्री पु एस हिआतो, उद्योग मंत्री, मिजोरम सरकार तथा डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित प्रतिष्ठित व्यक्ति इस प्रकार हैं – डॉ. आर. लाल थान तलुनागा, उप कुलपति, मिजोरम विश्वविद्यालय; पीयू आर वान्व्वांग, अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मिजोरम; पीयू एल आर थांगा, मिजोरम के मुख्य मंत्री के प्रधान सचिव; श्री आर. देओरी, सुपरिनटेंडिग इंजीनियज, सी पी डब्ल्यू डी, अन्य केंद्र/राज्य सरकारी विभागों के अधिकारी आदि। श्री एन के वासु, निदेशक, व.अ.स., जोरहाट द्वारा उद्घाटन समारोह में सभी उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया गया तथा परम्परागत फूलम गमोसा के अनुसार प्रतिष्ठित अतिथियों को डायस पर बुलाया। सुश्री इम्तीन्ला ए ओ, निदेशक, ब.बें.उ.अं. आर सी बी आर द्वारा शुरूआत (29 नवम्बर 2004) से अब तक ब.बें.उ.अं. का संक्षिप्त विवरण दिया गया।

माननीय मुख्यमंत्री, मिजोरम का स्वागत करते हुए डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.

बा.बें.उ.अ.के. काम्पलैक्स का उद्घाटन करते हुए पु लाल थानहवाला, माननीय मुख्यमंत्री, मिजोरम

डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. सभा को सम्बोधित करते हुए

बा.बें.उ.अ.के. का नवनिर्मित भवन

प्रतिष्ठित अतिथि

- महामहीम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, राष्ट्रपति द्वारा दिनांक 11 जून 2011 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया गया। इस दौरे के दौरान अनेक महत्वपूर्ण व्यक्ति एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, राष्ट्रपति, का भा.वा.अ.शि.प. तथा व.अ.सं., देहरादून के दौरे के दौरान अवगत कराते हुए डॉ. वी.के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.

- श्री आर. गोपालकृष्ण, प्रधानमंत्री के अतिरिक्त सचिव, नई दिल्ली ने 5 मई 2011 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया।
- श्री एम.के. नारायण, राज्यपाल, पश्चिमी बंगाल, कलकत्ता द्वारा 23 जून 2011 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया गया।
- योजना आयोग की एक टीम ने 19 जनवरी 2012 को भा.वा.अ.शि.प. का दौरा किया जिसमें श्री रंजन चटर्जी, वरिष्ठ सलाहकार और डॉ. विश्वजीत बनर्जी निदेशक (वानिकी) शामिल थे। टीम द्वारा भा.वा.अ.शि.प. और व.अ.सं., देहरादून के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की गई।
- एस ए ए आर सी (सार्क) वानिकी केंद्र, थिम्पू से चार सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने 1 मार्च 2012 को भा.वा.अ.शि.प. का दौरा किया। प्रतिनिधि मण्डल में डॉ. संजय वांगचुक, निदेशक सार्क वानिकी केंद्र, ए. के. लाल, हेड पस्सांग नार्बू, एस एफ एम विशेषज्ञ तथा छाडो त्शरिंग, पी एफ एम विशेषज्ञ शामिल थे।

- प्रेसीडेंट चाइनीज अकादमी आफ फॉरेस्ट्री, चीन के सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने 19 दिसम्बर 2011 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया।
- श्री स्टीव वाटकिंस तथा डॉ. के. एस. मुरली ने आर ए आर ई संगठन से 12 सितम्बर 2011 को व.अ.सं., देहरादून का दौरा किया जिन्हें विकसित प्रौद्योगिकी पर संक्षिप्त सूचना दी गई।
- डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा 20 और 21 जून 2011 को शु.व.अ.सं. का दौरा किया गया। उन्होंने 21 जून 2011 को मिस्ट चेम्बर तथा सुधारित नर्सरी सुविधाओं का उद्घाटन किया। उन्होंने संस्थान के सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों और अन्य कार्मिकों को संबोधित किया और उनके साथ बैठक की।
- नौ अफ्रीकी देशों के समूह तथा उनके साथ राज्य वन सेवा देहरादून की केंद्रीय अकादमी सहित कुल 18 भागीदारों ने भारत–अफ्रीका फोरम ने प्रशिक्षण कार्यक्रम 'रेगिस्तानीकरण का मुकाबला और जलवायु परिवर्तन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत तथा निदेशक, शु.व.अ.सं., जोधपुर से मुलाकात की।
- डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने हि.व.अ.सं., शिमला के दौरे के दौरान परिसर में 5 दिसम्बर 2011 को नवनिर्मित एम डी चतुर्वेदी स्मारक प्रशिक्षण काम्पलेक्स का उद्घाटन भी किया। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा कि परिसर को आधुनिकतम साजो–सामान से सुसज्जित किया जाएगा और संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों को राज्य वन विभागों सहित लक्षित वर्गों में प्रसारित किया जाएगा।

भा.वा.अ.शि.प. की 44 शासक मण्डल

भा.वा.अ.शि.प. की बैठक की 44वीं बैठक का आयोजन व.अ.सं., देहरादून के बोर्ड रूम में 24 जून 2011 को किया गया। बैठक की अध्यक्षता सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा की गई। बैठक में महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून तथा बोर्ड के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून के शासक मण्डल की 44वीं बैठक